आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2021–23
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' जून 2023

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 36
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

वर्ष –24 | अंक–06 | ज्येष्ठ –आषाढ़ | जून 2023

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

विनम्र श्रद्धांजली

(भइयो)

श्रद्धेय फणीन्द्र नाथ चतुर्वेदी (चन्द्रपुर / कानपुर)

सुपुत्र : स्व. सुरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी एवं स्व. शान्ति चतुर्वेदी

पत्नी : श्रीमती कान्ति चतुर्वेदी

जन्म : 8 मई 1948 – निर्वाण : 9 मई 2023

जगमग जगमग टिमटिम तारा, रखते थे आप ख्याल हमारा।
भइयो चाचा सबकी जान, बड़ी निराली आपकी शान।
बाऊजी, मम्मी, ताइजी, भाभी, सबको पूजा सबको माना।
सारे भाई थे दिल का टुकड़ा, बहनों का भी सजाया मुखड़ा।
आयुष, चिक्की, अंकू, पिंकू में बसती थी आपकी जान।
सबने सदा रखा आपका मान, आपकी कान्ति रहीं सदा साथ।
सारे घर पर रहा आपका हाथ, जीवन आपका आदर्श है हमारा।
आपका आशीष प्रतिपल बने सहारा।

- Daddy's Darling

पुत्र	:	अनुभव, अभिनव
पुत्री – दामाद	:	आकांक्षा – हर्षवर्धन
पौत्र	:	ओजस

शोकाकुल परिवार

श्रीमती किरण चतुर्वेदी पत्नी स्व. योगेन्द्र नाथ
स्व. शैल चतुर्वेदी – स्व. राजेन्द्र नाथ
श्रीमती पूनम चतुर्वेदी पत्नी स्व. मुनीन्द्र नाथ
श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी पत्नी स्व. अश्विनी कुमार
बहन : श्रीमती इन्द्रा, श्रीमती कल्पना चतुर्वेदी

भतीजे : अभिमन्यू एवं आयुष चतुर्वेदी

(र.क्र. 2023/1393)

आयु. नितिन

सुपुत्र : श्री देवेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (दीपक) – श्रीमती शोभा चतुर्वेदी (जसवन्त नगर / कोटा)

सुपौत्र : स्व. श्री कौशलेन्द्र नाथ जी चतुर्वेदी – श्रीमती पुष्पा चतुर्वेदी

का शुभ विवाह

आयुष्मती – शिवांगी

सुपौत्री : श्री भूषण चतुर्वेदी – श्रीमती गुंजन चतुर्वेदी (फरूखाबाद / साहिबाबाद)

सुपौत्री : स्व. श्री सुभाष चन्द्र जी चतुर्वेदी – स्व. श्रीमती रमा चतुर्वेदी

के साथ दिनांक 01.05.2023 को आगरा में सम्पन्न हुआ।

शुभकामनाओं सहित

डॉ. योगिता – डॉ. सौरभ, डॉ. श्वेता – डॉ. कपिल

काव्यांश, अस्मी एवं समस्त दीवान साहब परिवार।

निवास : 401, श्रीनाथ रीजेन्सी पुष्पा निवास, स्टेशन रोड, कोटा जं. (राजस्थान)

मो. – 9414076815

पुष्पा चतुर्वेदी – 6350215537, देवेंद्र नाथ चतुर्वेदी –9414076815, नितिन चतुर्वेदी – 9694944445

(र.क्र. 2023/1390)

शांति प्रमोद समर्थ एवं योग्यता छात्रवृत्ति निधि

मेरे पूज्य माता पिता **स्व. प्रमोद चतुर्वेदी एवं स्व. श्रीमती शांति चतुर्वेदी** की स्मृति में चतुर्वेदी छात्र छात्राओं हेतु आर्थिक सामर्थ योग्यता आधारित छात्रवृत्ति प्रदान करने की योजना है। पूज्य स्व. श्री प्रमोद चतुर्वेदी ने अपने जीवन काल में अनेक छात्रों को आर्थिक सहयोग दिया था।

इस योजना में योग्य जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को इंजीनियरिंग/मेडिकल शिक्षा के लिए प्रवेश लेने पर यह सहायता/छात्रवृत्ति देने की योजना है। इस हेतु दो स्नातक इंजीनियरिंग/मेडिकल छात्र छात्राओं को प्रथम वर्ष की ट्यूशन फीस का 50 प्रतिशत जिसकी अधिकतम सीमा 50,000 रूपये तक प्रति छात्र को दी जा सकेगी।

योग्यता मापदंड ::- वे छात्र छात्रा जो निम्न योग्यता मापदंड को पूरा करेंगे आवेदन कर सकते हैं:

1. जिनके अभिभावक की वार्षिक आय 5,00,000/- रुपये से अधिक न हो।
2. वे छात्र छात्रा जो इंजीनियरिंग/मेडिकल स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश ले रहे हैं।
3. जिन छात्रों ने 12वीं कक्षा में 85 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित किए हैं।
4. वे छात्र/छात्रा जिन्हें किसी अन्य माध्यम यथा केंद्रीय/राज्य सरकार/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम से आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही है। वह इस योजना के पात्र नहीं होंगे।

इच्छुक छात्र/छात्रा मेल आई. डी. - smisra1958@gmail.com पर आवेदन कर सकते हैं।

श्री संजय मिश्र

फ्लैट न. 2001 क्रीप्टोन टॉवर, न्यू प्रभादेवी रोड,
प्रभादेवी, मुंबई (महाराष्ट्र) - 400025
मोब. - 9810607145, 9987787145
मेल आई.डी.- smisra1958@gmail-com

(र.क्र. 2023/1404)

समाज के मेधावी विद्यार्थी

युवांश पाठक
आगरा,
सीबीएसई बोर्ड
कक्षा – १२वीं
96%

निशांत चतुर्वेदी
दिल्ली
सीबीएसई बोर्ड
कक्षा – १२वीं
95.4%

अनुष्का चतुर्वेदी
फिरोजाबाद
सीबीएसई बोर्ड
कक्षा – १२वीं
95%

जलज चतुर्वेदी
कोटा
सीबीएसई बोर्ड
कक्षा – १२वीं
94%

सोहम चतुर्वेदी
लखनऊ
सीबीएसई बोर्ड
कक्षा – १०वीं
98%

रिया चतुर्वेदी
लखनऊ
सीबीएसई बोर्ड
कक्षा – १०वीं
96.2%

संस्कृती चतुर्वेदी
गाजियाबाद
सीबीएसई बोर्ड
कक्षा – १०वीं
97%

उर्वी पाण्डेय
भोपाल
सीबीएसई बोर्ड
कक्षा – १०वीं
93%

श्रेयश चतुर्वेदी
मेरठ
सीबीएसई बोर्ड
कक्षा – १०वीं
93%

प्रज्ञा चतुर्वेदी
भोपाल
एमपी बोर्ड
कक्षा – १०वीं
91%

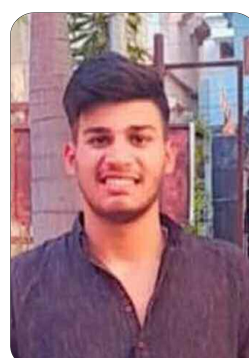

सागर चतुर्वेदी
कानपुर
सीबीएसई बोर्ड
कक्षा – १०वीं
85%

जिसके प्रति मन में सम्मान होता है,
जिसकी डांट में भी एक अद्‌भुत ज्ञान होता है,
जन्म देता है कई महान शख्सियतों को,
वो गुरु तो सबसे महान होता है।

गुरु पूर्णिमा

की हार्दिक

शुभकामनाएं

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	8
संपादकीय	9
गोत्र एवं उसका सामाजिक महत्व	11
सलाद - बढ़ाये भूख	13
दादी मां के नुस्खे	14
ऊं _स्वास्थ्य वर्धन	15
चाणक्य नीति	16
हास्य व्यंग : कमरबन्द उर्फ नाड़ा	17
।। वारिस ।।	19
छोछक और डाला (भात) देने की परंपरा क्यों?	21
समय	22
शक्ति पीठ पीताम्बरा (दतिया)	24
पूजिय बिप्र सील गुन हीना	26
समाज समाचार	28
बिछड़े स्वजन	30

अंक 06
जून 2023, वर्ष - 24

सभापति
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
पूर्व संपादक
श्री दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
श्रीमती चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
शशांक चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255
गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल
(मध्यप्रदेश)
मोबा. 9826086879
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com
वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED
10292296@cbin
BHIM UPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

अपनों से मन की बात

संगठन वह सामाजिक व्यवस्था या युक्ति है, जिसका लक्ष्य एक होता है। जो अपने कार्यों की समीक्षा करते हुए स्वयं का नियन्त्रण करती है, तथा अपने पर्यावरण से जिसकी अलग सीमा होती है। संगठन तरह-तरह के हो सकते हैं जैसे सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सैनिक, व्यावसायिक, वैज्ञानिक आदि।

संगठन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा उपक्रम के कार्यों को परिभाषित एवं वर्गीकृत किया जाता है और उन्हें विभिन्न व्यक्तियों को सौंपकर उनके अधिकार व कर्तव्यों को निश्चित किया जाता है।

एक संगठन उन कुछ लोगों का एक समूह है जो एक साथ काम करते हैं। आप समूह कुछ अलग या नया स्थापित करने के कार्य को संदर्भित करने के लिए संगठन शब्द का उपयोग कर सकते हैं लेकिन यह सदा ध्यान रखना चाहिए कि आपके अधिकारों से किसी को क्षति न हो। समाज व राजनीति में अनेक संगठन होते है। जिनकी सोच,विचारधारा, कार्य करने की पद्धति अलग होती है।

संगठन का प्रमुख उद्देश्य आपस मे मधुर सम्बन्ध स्थापित करना है। एक अच्छे संगठन में सदैव यह प्रयास किया जाता है कि समाज में किसी भी समस्या का यथाशीघ्र उचित व सर्वमान्य समाधान शीघ्रातिशीघ्र किया जाये। जिससे कि मधुर सम्बन्ध स्थापित हो व वैमनस्यता न हो। संगठन समाज की विभिन्न क्रियाओं को आनुपतिक एवं सन्तुलित महत्व प्रदान करता है। संगठन सम्बन्धी रचना से विभिन्न समाज के विभागों, उपविभागों, स्थितियों, कार्यों तथा क्रियाओं के मध्य समन्वय स्थापित किया जाता है। स्वस्थ संगठन समन्वय को सुविधाजनक बनाता है। जिससे मानवीय प्रसाधनों का श्रेष्ठतम उपयोग सम्भव हो जाता है।

संगठन का अर्थ प्रक्रिया के रूप में संगठन प्रबन्ध का एक कार्य है। जिसका सम्बन्ध संस्था के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक कार्यों को निश्चित करके, उनका समूहीकरण करने, दायित्वों और अधिकारों को परिभाषित करने व सौंपने तथा आपसी सम्बन्धों की व्याख्या करने से होता है।

संगठन गढ़े चलो, सुपंथ पर तुम,
वीर तुम बड़े चलो.....
त्याग ईर्ष्या, निज कष्ट,अहम, द्वेष और स्वहित,
अपने-पराये या अमीर-गरीब का भेद छोड़ तुम
वीर तुम बड़े चलो.....
भला हो जिसमें समाज का
समाज का संग राष्ट्र का, वह कार्य तुम करे चलो
वीर तुम बड़े चलो.....

मेरी टीम के कुछ साथियों के असामयिक गोलोक गमन से स्थान रिक्त हो गए थे। जिनको मैंने पूर्ण करने का प्रयास किया है। जिसमें श्री विनोद जी (मुंबई) को उपसभापति पद पर व साथ ही कुछ सक्रिय साथियों को मुख्य कार्यकारिणी सदस्य के रूप में जोड़ कर और क्रियाशील करने का प्रयास किया है, जिसमें श्री लोकेंद्र नाथ जी (गाजियाबाद), श्री शिव नारायण जी (कोटा), श्री आशीष जी (आगरा), श्री विपिन जी (लखनऊ), एवं श्रीमती पूनम जी (लखनऊ) एवम विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में मनोज मिश्रा जी,एम बाबू,(मैनपुरी) व संजय चतुर्वेदी (फरीदाबाद) को कार्यकारिणी में स्थान दिया गया है। इसके साथ ही राष्ट्रीय युवा प्रकोष्ठ में श्री सावन जी (आगरा) व श्री सुनील जी (जयपुर) को स्थान दिया गया है। इसी के साथ राष्ट्रीय महिला प्रकोष्ठ में श्रीमती अरुणा जी (कोटा) व श्रीमती कीर्ति मिश्रा जी (हैदराबाद) को सम्मिलित किया गया।

मंगलकामनाओं के साथ, सादर!

संपादकीय

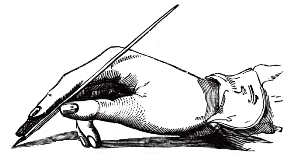

प्रसन्न व्यक्ति वह है जो निरंतर स्वयं का मूल्यांकन एवं सुधार करता है, जबकि दुःखी वह है जो दूसरों का मूल्यांकन करता रहता है। फिक्र छोड़ो,मस्त रहो।

दुःख उधार का है, आनंद स्वयं का है।आनंदित कोई होना चाहे तो अकेले भी हो सकता है। दुखी होना चाहे तो दूसरे की जरुरत होती है। कोई धोखा दे गया,किसी ने गाली दे दी,कोई तुम्हारे मन के अनुकूल न चला,सब दुःख दूसरे से जुड़े है और आनंद का दूसरे से कोई सम्बन्ध नहीं है।आनंद स्वयंस्फूर्त है। दुःख बाहर से आता है। आनंद भीतर से आता है।

उदय किसी का भी अचानक नही होता।

सूर्य भी धीरे धीरे निकलता है और ऊपर उठता है। धैर्य और तपस्या जिसमें है,वही संसार को प्रकाशित कर सकता है।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी भाई संजय जी, मुंबई द्वारा अपने माता पिता की स्मृति में समाज के मेधावी बच्चों के लिए छात्रवृत्ति की घोषणा की है। जिसकी सूचना इसी अंक में प्रकाशित की गई है।

महासभा कार्यकारिणी के सभी पदोन्नत व मनोनीत सदस्यों को हार्दिक बधाई।

श्री मिथिलेश जी, लखनऊ द्वारा गोत्र व उसके सामाजिक महत्व की जानकारी विस्तृत रूप से आपके सम्मुख प्रस्तुत की जा रही है इसी के साथ ॐ के बारे ज्ञानवर्धक जानकारी वाह पीतांबरा शक्ति पीठ के बारे में भी विस्तृत जानकारी आपके सम्मुख प्रस्तुत की जा रही है आशा है आपको हमारी यह पठन सामग्री पसंद आएँगी।

हर लम्हा, हर मौका खास हो जाता हैं,
अगर उसे काव्य माला में पिरोया जाये।
चेहरे पर एक मुस्कान खिल जाती हैं जब,
कोई शायर शायरी कह जाता हैं।
ऐसे ही कुछ शब्दों को माला में पिरोया हैं,
खुशियों के शब्दों से काव्य का बनाया हैं।
श्रीमती वंदना चतुर्वेदी पूर्व अध्यक्ष पूणे सभा को सादर श्रद्धांजलि।

– शशांक चतुर्वेदी

कार्यकारिणी बैठक की सूचना

श्री माथुर सभा आगरा (रजि.) के द्वारा 26 मार्च 2023 को ग्राम फ़रौली कार्यकारिणी बैठक दिये गये निमंत्रण को स्वीकार करते हुए श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की आगामी कार्यकारिणी बैठक 13 अगस्त 2023, रविवार को आगरा में आयोजित किया जाना निर्धारित किया गया है। निवेदन है कि समाज चिंतन में सहयोग हेतु अपने आगमन की पूर्व सूचना 15 जुलाई 2023 तक मुझे अवश्य देने की कृपा करे।

मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी, मन्त्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, 9871170559

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
महासभा कार्यकारिणी - 2020-2023

संरक्षक : डॉ. सतीश चतुर्वेदी (नागपुर), श्री भरत चंद्र चतुर्वेदी(भोपाल) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्र आर. चतुर्वेदी, (मुम्बई) (पूर्व सभापति), श्री त्रिभुवन चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री कमलेश पाण्डे (नोएडा) (पूर्व सभापति), ले. ज. विष्णुकांत चतुर्वेदी (नोएडा), श्री मदन चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी (नोएडा)

सभापति : डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (दिल्ली)

उप सभापति : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी,(भोपाल), श्री कैलाश चतुर्वेदी (कासगंज), श्री मनोज चतुर्वेदी (बैंगलोर), श्री विनोद चतुर्वेदी (मुम्बई)
मंत्री : श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी (नोएडा)
संयुक्त मंत्री : श्री भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर), श्री अंशुमान चतुर्वेदी (जयपुर)
कोषाध्यक्ष : श्री महेश चतुर्वेदी (दिल्ली)

संपादक,चतुर्वेदी चंद्रिका – श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल) **ऑडिटर – शिव एसोसिएट,** नई दिल्ली

माननीय कार्यकारिणी सदस्य : श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (नागपुर), डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटावा), श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल), श्री मनीष चतुर्वेदी (हरदोई), डा. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा), डा. राजीव चतुर्वेदी (पुणे), श्री पंकज चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री सुशील पाठक (मुम्बई), डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती बीना मिश्रा (हैदराबाद), श्री राकेश चतुर्वेदी(बरेली), श्री करुणेश चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री अजय चौबे(भोपाल), श्री प्रदीप चतुर्वेदी "लालन" (आगरा), श्री भुवनेश कुमार चौबे(गोंदिया), श्री पुनीत चतुर्वेदी (आगरा), श्री प्रदीप चतुर्वेदी (ग़ाज़ियाबाद), श्री ललित चतुर्वेदी (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री विशाल चतुर्वेदी (पुरा), श्री गोविंद चतुर्वेदी (जयपुर), श्री गोविंद चतुर्वेदी (इंदौर), श्री ललित चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री अभयराज चतुर्वेदी (गुरुग्राम), श्री विनय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री अभिषेक चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री प्रवेश चतुर्वेदी (कानपुर) श्री नीलकमल चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री हेमंत चतुर्वेदी (नासिक), श्री अनिल चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री सुदीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री सुशील चतुर्वेदी (फ़रीदाबाद), डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री शिव नारायण चतुर्वेदी (कोटा), श्री विपिन चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (आगरा)।

स्थाई आमंत्रित सदस्य : श्री अविनाश चतुर्वेदी (कानपुर), श्री पदम कुमार चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी (लोनी), श्री सुभाष चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी "अन्नी" (प्रयागराज), श्री मनमोहन चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री बिपिन पांडेय (गाजियाबाद), श्री कमलेश रावत (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री प्रवीण चतुर्वेदी (हैदराबाद), श्री ईश्वर नाथ चतुर्वेदी (कोलकात्ता), श्री अरुण चतुर्वेदी (जयपुर), श्री अमित चतुर्वेदी (मथुरा), श्री योगेंद्र चतुर्वेदी (ग्वालियर)।

विशेष आमंत्रित सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री गजेंद्र चौबे (दमोह), श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (फरौली), श्री कौशल चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मधुकर पाठक (आगरा), श्री चैतन्य किशोर चतुर्वेदी (फर्रूखाबाद), श्री संजय मिश्रा (कानपुर), श्री अम्बर पाण्डे (भोपाल), श्री अरुण चतुर्वेदी (नागपुर), श्री मुकेश चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री भारत भूषण चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शशिकांत चतुर्वेदी (आगरा), श्री अरविंद चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री महेंद्र चतुर्वेदी (जयपुर), श्री दिलीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री लेखेंद्र चतुर्वेदी "पुत्तन" (लखनऊ), श्री शशांक गिरीश चौबे (नागपुर), श्री संजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री बसंत रमेश चौबे (भिलाई), श्री नितिन चतुर्वेदी (निम्बाहेड़ा), श्री राजेश चतुर्वेदी, "गुड्डू" (कोलकत्ता), श्री हर्ष मोहन चतुर्वेदी, "मोहित" (आगरा), श्री दिनेश चतुर्वेदी (बाह), श्री मनीष चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मनोज मिश्रा (मैनपुरी), श्री संजय चतुर्वेदी (फरीदाबाद)।

महिला प्रकोष्ठ : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (भोपाल) (संयोजक), श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी (कानपुर), श्रीमती विनीता चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती समता चतुर्वेदी (दौसा), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती संध्या चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी (जयपुर), श्रीमती दीपाली चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती रश्मि चतुर्वेदी (नोयडा), श्रीमती अरूणा चतुर्वेदी (कोटा), श्रीमती कीर्ति मिश्रा (हैदराबाद)।

युवा प्रकोष्ठ : डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), (संयोजक), श्री सुधांशु चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री रीगल चतुर्वेदी (भिंड), श्री दिवस चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (हावड़ा), श्री दुर्गेश चतुर्वेदी (जयपुर) श्री गगन चतुर्वेदी (पुरा), श्री पुलकित चतुर्वेदी (नोएडा), श्री सुनील चतुर्वेदी (जयपुर), श्री सावन चतुर्वेदी (आगरा)।

चिकित्सा प्रकोष्ठ : डॉ. संजय चतुर्वेदी (आगरा), डॉ. अरविंद चतुर्वेदी (दिल्ली), डॉ. निखिल चतुर्वेदी (आगरा)
आई टी प्रकोष्ठ : श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री प्रसून चतुर्वेदी (भुवनेश्वर)।

पता : 405-406, चिरंजीव टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली - 110049

गोत्र एवं उसका सामाजिक महत्व

- मिथलेश कुमार चतुर्वेदी, (करेंटी/लखनऊ)

ये सात जन्मों और जन्म जन्मान्तर का साथ क्या है? विवाह में कन्यादान क्यों किया जाता है? सगोत्र विवाह क्यों वर्जित है? गोत्र क्या होता है ? पितृसत्तात्मक व्यवस्था का प्रमुख कारण क्या है? एक पिता अपनी पुत्री को अपना गोत्र क्यों नही दे सकता है ? विवाहित पुत्री के माता-पिता के घर को मायका क्यों कहते है? भारतीय समाज में पुत्र की प्रबल आकांक्षा क्यों होती है? उक्त सभी प्रश्नों का सटीक उत्तर हमारी गोत्र प्रणाली में दिया गया हैं। यह गोत्र जो वैदिक काल से हमको याद कराया जाता रहा है, को आज हम उतना महत्व नही दे पा रहे है, जितना वास्तव में इसे देना चाहिये। हमारी महान वैदिक परम्परा में किसी भी पूजा या मांगलिक कार्य से पहले संकल्प लिया जाता है। वैदिक काल से ही हमारे ऋषि, मुनि अथवा हमारे कुल पुरोहित विभिन्न संस्कारों का प्रारम्भ संकल्प पाठ से कराते है जिसके अन्तर्गत अपने पिता, प्रपिता (बाबा), पितामह (बाबा के पिता), प्रपितामह (बाबा के बाबा) के साथ-साथ गोत्र, प्रवर, आदि का उच्चारण कराया जाता है। इसमें जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्ते का उल्लेख होता है तथा इसमें सृष्टि के एक-एक पल की गणना के साथ संवत को भी याद रखा जाता है। हम अपने घरों में या किसी अन्य के यहाँ किसी धार्मिक अथवा मांगलिक कार्य में आमन्त्रित होने पर निम्न संकल्प अवश्य सुनते हैः-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुरू, ॐ अद्य ब्रह्मणोऽह द्वितीय परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे, कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे पुण्य (अपने नगर/गांव का नाम लें) क्षेत्रे बौद्धावतारे वीर विक्रमादित्यनृपते ----- (विक्रम संवत उपस्थित वर्ष में 57 जोड़ने पर आता है), तमेऽब्दे प्लवंग नाम संवत्सरे दक्षिणायने ऋतो महामंगल्य प्रदेमासानां मासोत्तमे --- मासे --- पक्षे --- तिथौ --- वासरे (गोत्र का नाम लें) गोत्रोत्पन्नोऽहं अमुकनामा (अपना नाम लें) सकलपापक्षयपूर्वकं सर्वारिष्टि शांतिनिमित्तं सर्वमंगलकामनया– श्रुतिस्मृत्योक्तफलप्राप्त्यर्थं मनेप्सित कार्य सिद्धयर्थं श्री ---- (जिस देवी या देवता की पूजा कर रहे हैं उनका नाम ले) पूजनं च अहं करिष्ये। तत्पूर्वागंत्वेन निर्विघ्नतापूर्वक कार्य सिद्धयर्थं यथामिलितोपचारे गणपति पूजनं करिष्ये।

यह संकल्प लेना हमारी महान वैदिक परम्परा का अंग है और इस संकल्प के कारण हम और हमारी पीढ़ी अपने गोत्र को याद रखती है। गोत्र उन लोगों को संदर्भित करता है जो अपने पिता के पक्ष से एक समान पूर्वज के वंशज है। इसका अर्थ एक ही परिवार या परिजनों के समूह से है। यह गोत्र हमको कहॉ से मिलता है ? अति प्राचीन काल से यह मान्यता है कि सप्तर्षि ऋषियों से मनुष्यों का वंश आगे बढ़ा और इन्ही सप्तर्षियों को गोत्रकारिन कहा जाता है। जिसके आधार पर हमारे गोत्रों के नाम है। यह मान्यता है कि एक ऋषि गोत्र के सभी वंशज आपस में भाई बहन है, और इसीलिये हमारे ऋषियों ने एक गोत्र में विवाह पर प्रतिबन्ध लगाया था। वैदिक परंपराओं के अनुसार पहला गोत्र स्वयं का होता है, दूसरा मां का और तीसरा दादी का गोत्र होता है। अधिक शुचिता के लिये कई लोग नानी के गोत्र का भी पालन करते हैं। वैदिक संस्कृति के अनुसार, एक ही गोत्र में विवाह करना वर्जित है क्योंकि एक ही गोत्र के होने के कारण स्त्री–पुरुष भाई और बहन हो जाते हैं। इसका मुख्य तथ्य यह है कि एक ही गोत्र होने के कारण गुणसूत्रों में समानता होती है। आज के आनुवंशिक विज्ञान के अनुसार यदि समान गुणसूत्रों वाले दो व्यक्तियों में विवाह हो तो उनकी सन्तति आनुवांशिक विकारों के साथ उत्पन्न होगी। ऐसे दंपत्तियों की संतान में एक सी विचार धारा, पसंद होती है एवं व्यवहार–सोच आदि में कोई नयापन नहीं होता। ऐसे बच्चों में रचनात्मकता का अभाव होता है। कई वैज्ञानिक शोधों द्वारा यह तथ्य बताया गया कि सगोत्र विवाह करने पर अधिकांश ऐसे दंपत्ति की संतानों में अनुवांशिक दोष अर्थात मानसिक विकलांगता, अपंगता आदि गंभीर रोग जन्मजात पाए जाते हैं। ऐसे रोगों की संख्या लगभग 127है। जिसमें से कुछ रोग 25 वर्ष की आयु के पहले एवं कुछ रोग 25 वर्ष की आयु के उपरांत होने की संभावना रहती है। शास्त्रों के अनुसार इन्हीं कारणों से सगोत्र विवाह पर प्रतिबंध लगाया था। प्रत्येक मानव का एक गोत्र होता हैं। गोत्र एक प्राकृतिक वैज्ञानिक व्यवस्था हैं। हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, अधर्मी, विधर्मी इन सबके गोत्र होते हैं। यह अलग तथ्य है कि इनके धर्म में इस पर कोई चर्चा नही है जबकि सनातन धर्म में यह वैज्ञानिक सत्यता है । कल्पना कीजिए एक बच्चा जिसे अपने माता–पिता के विषय में कुछ नहीं मालूम, उसका गोत्र क्या होगा ? ऐसी अवस्था में उसे कश्यप गोत्रीय माना जायेगा । यह शास्त्रोक्त व्यवस्था है –

''गोत्रस्य त्वपरिज्ञाने काश्यपं गोत्रमुच्यते। यस्मादाह श्रुतिस्सर्वाः प्रजाः कश्यपसंभवाः।। (हेमाद्रि चन्द्रिका) अर्थात जिसका गोत्र अज्ञात हो उसे कश्यप गोत्रीय (कश्यप गोत्र का) माना जाएगा और यह एक शास्त्र सम्मत व्यवस्था है। इससे यह प्रतीत होता है कि हमारे ऋषियों को डीएनए तथा क्रोमोसोम के विषय में अगाध जानकारी थी।

विज्ञान को यह जानकारी 1842 एवं उसके बाद हुयी एवं इस पर वैज्ञानिको ने शोध करना प्रारम्भ किया और बताया कि गुणसूत्र या क्रोमोसोम (Chromosome) सभी वनस्पतियों एवं जीवो की कोशिकाओं में पाये जाते है और ये डीएनए तथा प्रोटीन के बने होते है । गुणसूत्र (Chromosome) में आनुवांशिक गुण होते हैं, जो माता-पिता से DNA अणु के रूप में अगली सन्तति में जाते हैं। DNA अणु में कोशिका के निर्माण और संगठन की सभी आवश्यक सूचनाएँ होती हैं। गुणसूत्रों को ही अनुवांशिक लक्षणों का वाहक कहा जाता है। प्रत्येक कोशिका के मध्य में गोलाकार या अण्डाकार रचना होती है, जिसे केन्द्रक कहा जाता है और यह डीएनए को कोशिका विभाजन के दौरान सटीक रुप से उनकी प्रति copy करने की अनुमति देते है ।

आम तौर पर मानव शरीर की प्रत्येक कोशिका में गुणसूत्रों की संख्या 46 होती है जो 23 के जोड़े में होते हैं। इनमे से 22 गुणसूत्र पुरुष और महिला में समान और अपने-अपने जोड़े के समजात (Autosomes) होते हैं। 23वें जोड़े के गुणसूत्र स्त्री और पुरूष में समान नहीं होते जिन्हे विषमजात (Hetrosomes) गुणसूत्र कहते है । हमारा सम्पूर्ण व्यक्तित्व कैसा होगा, इसके लिये यही गूणसूत्र जिम्मेंदार होते है। इसी कारण माता-पिता के चेहरो से सन्तान का चेहरा मिलता है। इन गूणसूत्रों में 50 प्रतिशत माता का तथा 50 प्रतिशत पिता का योगदान होता है। महिलाओं में XX सूत्र होते है तथा पुरुषों में 1X तथा 1Y गुणसूत्र होता है। Y गुणसूत्र X गुणसूत्र से छोटा होता है। हम सब यह जानते है कि सन्तानोत्पति में यही X तथा Y गुणसूत्र यह निर्धारित करते है कि सन्तान पुत्र होगी अथवा पुत्री। दो अलग-अलग गोत्रों के पुरुष एवं महिला के विवाहोपरान्त यदि पुत्री हुई तो गुणसूत्र XX होगा। यह गुण सूत्र पुत्री में माता एवं पिता दोनों से आते है। XX गुणसूत्र अर्थात पुत्री के XX गुणसूत्र के जोड़े में एक X गुणसूत्र पिता से तथा दूसरा X गुणसूत्र माता से आता है तथा इन दोनों गुणसूत्रों का संयोग एक गांठ सी रचना बना लेता है। जिसे Crossover कहा जाता है। इसी प्रकार XY गुणसूत्र के संयोग से पुत्र का जन्म होता है। पुत्र में Y गुणसूत्र केवल पिता से ही आना संभव है क्योंकि माता में Y गुणसूत्र होता ही नही है। दोनों गुणसूत्र असमान होने के कारण पूरा Crossover नही हो पाता है । अधिकतम 5% तक ही होता है और 95% Y गुणसूत्र ज्यों का त्यों (Intact) ही रहता है। इसका अर्थ है कि Y गुणसूत्र महत्वपूर्ण हुआ क्योकि Y गुणसूत्र के विषय में हम निश्चिंत है की यह पुत्र में केवल पिता से ही आता है। बस इसी Y गुणसूत्र का पता लगाना और इसकी समृद्धि ही गोत्र प्रणाली का एकमात्र उदेश्य है जो हजारों/ लाखों वर्षों पूर्व हमारे ऋषियों ने जान लिया था। आधुनिक विज्ञान में सर्वप्रथमम कार्ल विलहलम वोन नागीली ने 1842 में एवं स्ट्रासबर्गर ने 1875 ई मे गुणसूत्र के विषय में जाना था। सर्वप्रथम क्रोमोसोम (रंगीन काय) शब्द का प्रयोग वाल्डेयर ने 1889 में किया।

पितृसत्ता (Patriarchy) व्यवस्था का कारण क्या है एवं एक पिता अपना गोत्र अपनी पुत्री को क्यों नही दे सकता है, कन्यादान की परम्परा क्यों है - इसका उत्तर हमारी वैदिक गोत्र प्रणाली में है। वैदिक गोत्र प्रणाली Y गुणसूत्र पर आधारित है इसलिये वैदिक काल से ही पितृसत्तात्मक व्यवस्था का उदय हुआ। उदहारण के लिए यदि किसी व्यक्ति का गोत्र कश्यप है तो इसका अर्थ हे कि उस व्यक्ति में विधमान Y गुणसूत्र कश्यप ऋषि से आया है या कश्यप ऋषि उस Y गुणसूत्र के मूल है, चूँकि Y गुणसूत्र स्त्रियों में नही होता यही कारण है कि विवाह के पश्चात स्त्रियों को उसके पति के गोत्र से जोड़ दिया जाता है। अपने गोत्र का संवाहन यानी उत्तराधिकार पुत्री को एक पिता प्रेषित न कर सके, इसलिये विवाह से पहले कन्यादान कराया जाता है और गोत्र मुक्त कन्या का पाणिग्रहण कर भावी वर अपने कुल गोत्र में उस कन्या को स्थान देता है। माता पिता यदि कन्यादान करते हैं, तो इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि वे कन्या को कोई वस्तु के समकक्ष समझते हैं, बल्कि इस दान का विधान इस निमित्त किया गया है, कि दूसरे कुल की कुलवधू बनने के लिये और उस कुल की कुल धात्री बनने के लिये, उसे गोत्र मुक्त होना चाहिये। डीएनए मुक्त हो नहीं सकती क्योंकि भौतिक शरीर में वे डीएनए रहेंगे ही, इसलिये मायका अर्थात माता का रिश्ता बना रहता है, गोत्र यानी पिता के गोत्र का त्याग किया जाता है। तभी वह भावी वर को यह वचन दे पाती है कि उसके कुल की मर्यादा का पालन करेगी यानी उसके गोत्र और डीएनए को करप्ट नहीं करेगी, वर्णसंकर नहीं करेगी, क्योंकि कन्या विवाह बाद कुल वंश के लिये रजदान करती है और मातृत्व को प्राप्त करती है। यही कारण है कि हर विवाहित स्त्री माता समान पूज्यनीय हो जाती है। भगवान कृष्ण ने भगवद्गीता के अध्याय एक के श्लोक संख्या-41 एवं 43 में कहा है कि -

अधर्माभिभवात, कृष्ण, प्रदुष्यन्ति, कुलस्त्रियः, स्त्रीषु, दुष्टासु, वार्ष्णेय, जायते, वर्णसंकरः।।41।।

दोषैः, एतैः, कुलघ्नानाम, वर्णसंकरकारकैः, उत्साद्यन्ते, जातिधर्माः, कुलधर्माः, च, शाश्वताः।।43।।

अर्थात पाप के अधिक बढ़ जाने से कुल की स्त्रियॉ अत्यन्त दूषित हो जाती है और हे वार्ष्णेय स्त्रियों के दूषित चरित्र वाली हो जाने पर वर्णसंकर सन्तान उत्पन्न होती है । इन वर्णसंकर कारक

दोषों से कुलघातियों के सनातन कुल–धर्म और जाति– धर्म नष्ट हो जाते हैं।

सात जन्मों का साथ एवं जन्म जन्मान्तर का साथ के प्रश्नों का उत्तर भी हमारी गोत्र प्रणाली में है । उदाहरण के लिये यदि पुत्री है तो 50% पिता और 50% माता का सम्मिलन है। फिर यदि पुत्री की पुत्री हुई तो वह डीएनए 50% का 50% रह जायेगा, फिर यदि उसके भी पुत्री हुई तो उस 25% का 50% डीएनए रह जायेगा, इस तरह से सातवीं पीढ़ी में पुत्री जन्म में यहः घटकर 1% रह जायेगा अर्थात एक पति–पत्नी का ही डीएनए सातवीं पीढ़ी तक पुनः पुनः जन्म लेता रहता है, और यही है सात जन्मों का साथ। यदि पुत्र है तो XY में 95% पिता और 5% माता का सम्मिलन है। पुत्र का गुणसूत्र पिता के गुणसूत्रों का 95% गुणों को अनुवांशिकी में ग्रहण करता है और माता का 5% (जो कि किन्हीं परिस्थितियों में 1% से कम भी हो सकता है) डीएनए ग्रहण करता है, और यही क्रम अनवरत चलता रहता है, जिस कारण पति और पत्नी के गुणों युक्त डीएनए बारम्बार जन्म लेते रहते हैं, अर्थात यह जन्म जन्मांतर का साथ हो जाता है । वंश आगे बढ़ाने के लिये पुत्र आवश्यक है क्योकि पुत्र में ही Y गुणसूत्र होता है इसीलिये सनातन धर्म में पुत्र का होना आवश्यक माना गया है। वैवाहिक निमंत्रण पत्रों पर आत्मज़ या आत्मजा लिखा होता है एवं इसका सन्धिविच्छेद यदि आप करें तो आप पायेगें कि आत्म + ज या आत्म + जा अर्थात आत्म=मैं, ज या जा =जन्मा या जन्मी, यानी मैं ही जन्मा या जन्मी हूँ, इसीलिये, अपने ही अंश को पित्तर जन्मों जन्मों तक आशीर्वाद देते रहते हैं और हम भी अमूर्त रूप से उनके प्रति श्रद्धेय भाव रखते हुए आशीर्वाद ग्रहण करते रहते हैं, और यही सोच हमें जन्मों तक स्वार्थी होने से बचाती है, और सन्तानों की उन्नति के लिये समर्पित होने का सम्बल देती है।

यह ज्ञान एवं सुचिता अन्य किसी सभ्यता में दृश्य ही नहीं है। सनातन धर्म हमारे सभी प्रश्नों का सटीक एवं तर्कपूर्ण ढंग से उत्तर प्रदान करता है।

।। इति शुभम।।

सलाद - बढ़ाये भूख

- रेनू चतुर्वेदी, मैनपुरी

आज सलाद के भी अनेक रूप एवं सज्जा है,अलग–अलग अंदाज तथा स्वाद से सरोबार सलाद भोजन को और ज्यादा आकर्षक व हैल्दी बनाता है,जिसे भूख न भी हो तो सलाद सज्जा देख भोजन की ओर अग्रसर हो जाता है , सलाद भोजन को स्वादिष्ट, सुपाच्य भी बनाता है।

सलाद के प्रकारो की बात करें तो यह अंकुरित अनाज, फलों एवं कच्ची सब्जियों से तैयार किए जाते हैं। हम कुछ प्रमुख सलाद बनाने की चर्चा करेंगे।

कैरेट कुकुंबर सलाद

सामग्री – एक कप कसी हुई गाजर, दो नींबू का रस ,एक खीरा मोटा–मोटा कटा हुआ,एक हरी बारीक कटी मिर्च,एक चम्मच भुना तिल, दो बड़े चम्मच पनीर, पुदीना की ताजी पत्तियां और स्वादानुसार नमक।

विधि – आधे नींबू रस में खीरे को नमक को कुछ देर मेरीनेट करके रखें। गाजर में नमक, नींबू रस और हरी मिर्च मिलाएं।अब सर्विंग डिश में खीरे को पनीर,भुने तिल और पुदीना के साथ सजाकर परोसें।

कैबेज सलाद

सामग्री– एक कप बारीक कटी पत्ता गोभी, ब्लांच किए हुए दो तीन ब्रोकली के टुकड़े, एक बारीक कटी गाजर, एक बारीक कटी पीली शिमला मिर्च, एक बड़ा चम्मच आंलिव आयल, नींबू, व्हाइट विनेगर।

विधि – पत्ता गोभी, ब्रोकली, गाजर, शिमला मिर्च मिलाएं। ऊपर से नींबू रस, आंलिव आयल, व्हाइट विनेगर स्वादानुसार नमक डालकर सज्जा कर सर्विंग बाउल में रखें।

स्पाउट सलाद – एक कप अंकुरित काले चने (स्टीम में पकाया हुआ), एक चम्मच स्प्राउट मूंग, दो चौकोर कटा टमाटर , दो बारीक कटी हरी मिर्च, एक नींबू रस, एक चम्मच बारीक कटा हरा धनिया।

विधि – सर्विंग डिश में चना स्प्राउट, मूंग स्प्राउट, टमाटर, हरी मिर्च, स्वादानुसार नमक मिलाएं। ऊपर से नींबू डालकर हरी धनिया से सजाकर सर्व करें।

दादी मां के नुस्खे

- जिज्ञासा, लखनऊ

1. आम के पत्ते छाया में सुखाकर जलाकर बारीक पीस कर रोजाना सुबह शाम मंजन की तरह उपयोग करने से मसूड़े से खून व दुर्गन्ध दूर कर दांतो को स्वस्थ बनाता है।
2. दो कच्चे आम आग में भूनकर उनका गूदा निचोड़कर 250ग्राम पानी में चीनी मिला कर दिन में दो बार लेने से लू की वीमारी में लाभ मिलता हैं।
3. जामुन की छाल या गुठली को सुखाकर चूर्ण बनाकर 6-6 माशे सुबह शाम ताजे जल से लेने पर शुगर नियंत्रित करने में लाभ होता है।
4. मीठे आम के 20 ग्राम रस में 2 ग्राम सोंठ सुबह 8-10 दिन तक लेने पर पाचनशक्ति बढ़ती है।
5. गर्मियों में चक्कर आते हो, जी घबराता हो तो आंवले का शरबत लेने पर लाभ होता है।
6. रात को सोते समय 2-3 माशा सूखे आंवले का चूर्ण गुनगुने दूध के साथ लेने पर कब्ज दूर करने में लाभ होता है।
7. अनार का छिलका बारीक पीस कर 4 ग्राम ताजे पानी के साथ दिन में दो बार लेने पर बहुमूत्रता में लाभ होता हैं। इसके साथ ही बहुमूत्रता में भूने चने गुड़ के साथ दस दिन लेने पर भी लाभ होता हैं।
   परहेज -- चावल न खाएं।
8. एक तोला तुलसी पत्तियों का रस के साथ चार तोला मूली का रस गुड़ के साथ दिन में दो बार लेने से पीलिया दूर करने में लाभ होता है।
9. 10 ग्राम मलाई में चौथाई नींबू निचोड़कर चेहरे पर रोजाना लगाने से चेहरे का निखार बढ़ने के साथ ही मुंहासों में भी लाभ होता है। गीले चेहरे पर न लगाएं।
10. दो दो ग्राम सोंठ, अजवायन, जीरा,नमक और चीनी को नींबू रस में मिलाकर लेने से पेट दर्द में लाभ होता हैं।
11. दांत दर्द में नींबू रस में लोंग पीसकर लगाने से लाभ होता है। दांत दर्द में खाना सोडा मलने या अदरक चबाने से भी लाभ होता है।
12. यदि बच्चा रात में सोते हुए पेशाब कर देता हो तो एक अखरोट की गिरी पांच ग्राम किशमिश के साथ सोते समय एक बार खिलाने से दस दिन में लाभ होता है।
13. लकवा होने पर गाय वाला देशी घी नाक में डालने से लाभ होता है।
14. नहाने से पहले नाभि, नाक,कान तथा अंगूठे के नाखून पर सरसों तेल लगाने से आंखों एवं त्वचा को लाभ होता है।
15. टांयलेट सीट पर बैठने पर दांतों को दबाएं रखने से दांतों को लाभ होता हैं, इसके साथ ही लकवा होने की शंका भी कम होती है।

ग्रीष्म ऋतु आई......

- कविता शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी

परीक्षाएं हो गई,
स्कूलों की छुट्टी आई ।
दोपहरी धूप में पापा की ,
घर में नजरबंदी छाई ।
धूप में निकलने की
सख्त हुई मनाई ।
दोपहर की धूप और
लहराते वो ताश।
पतंगों से पटा रहता,
शाम को आकाश।
सुहाती है रात की,
नन्ही सी लम्बाई ।
खीरा , ककड़ी फालसे, साथ में
खोज तरबूज खरबूज की हुई।
लस्सी और शर्बत की,
जरूरत भी रोज हुई।
लद गई है आमों से
गांवों की अमराई।।

शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी 94 चौबान मुहल्ला जिला फिरोजाबाद उत्तर प्रदेश पिन कोड 283203

रचना अंकन तिथि 08.05.2023

ऊं _स्वास्थ्य वर्धन

- दिलीप सिकंदरपुरिया, लखनऊ

ऊं (ओउम) का जब हम उच्चारण करते हैं तो तीन वर्णों को उच्चारित करते हैं, --- ओ मतिष्क से, उ हृदय से, म नाभि से जुड़ता है। ऊं के सतत उच्चारण से मन,मतिष्क और जीवन तीनों में तारतम्य बनता है, जिससे जीवन उद्देश्यपूर्ण हो जाता है।माना जाता है कि ऊं के बिना सृष्टि की कल्पना भी नहीं हो सकती है। ऊं सिर्फ एक पवित्र ध्वनि ही नहीं बल्कि अनन्त शक्ति का प्रतीक हैं। ऊं के उच्चारण से शरीर के अलग - अलग भागों में कंपन्न शुरू होती हैं, जैसे कि ओ- से शरीर के निचले हिस्से में, उ- से शरीर के मध्य भाग में, म- से शरीर के ऊपरी भाग में कंपन्न शुरू होने लगता है। ऊं शब्द के उच्चारण से कई शारीरिक, मानसिक और आत्मिक लाभ मिलते हैं।अमेरिका के एक एफ एम रेडियो पर सुबह की शुरुआत ऊं शब्द से ही होती हैं।

ऊं बोलते समय पूरा ध्यान उच्चारण पर ही रखते हैं, जिससे मस्तिष्क में मौन उत्पन्न होने से शरीर तनाव रहित होकर स्वास्थ्यवर्धन महसूस करता है।

प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग विशेषज्ञ आकाश साहू कहते हैं कि ऊंएक अध्यात्मिक साधना है, जिससे विपदा,कष्ट, विध्नों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। ऊं मन, मस्तिष्क,शरीर को स्वस्थ कर तनाव, निराशा,क्रोध से बचाव करता है। चिकित्सक आकाश जी कहते हैं कि श्वास, थायराइड, अनिद्रा, रक्तचाप, स्त्री रोग,अपचन, वायु विकार,दमा,उदर, मानसिक, मस्तिष्क, ह्दय आदि अनेक विमारीयों के लिए लाभदायक है। प्राणायाम, ध्यान,योग आदि सभी को ऊं के उच्चारण से शुरू किया जाता है। उनके अनुसार मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए दिन में कम से कम 21 बार ऊं का उच्चारण करना चाहिए। शाम को भोजन सोने से दो घंटे पहले लेना चाहिए। दिन में कम से कम एक बार दिल खोलकर हंसना चाहिए। ऊं के उच्चारण से हृदय एवं पाचनशक्ति स्वस्थ रहती है। अनिद्रा से बचने हेतु बेड पर जाते ही ऊं का उच्चारण करने से नींद आ जाती है। डायबिटीज़ एवं हाई बीपी के लिए भी ऊं का उच्चारण लाभदायक होता है।

योग प्रशिक्षक पं नागेन्द्र पाण्डेय बताते हैं कि यदि आप तनाव के कारण छोटी छोटी बातों पर परेशान होते हैं तो ऊं का उच्चारण कब और कैसे करें ?? रोज सुबह सुर्योदय के समय एक शांत स्थान पर सुखासन या किसी आसन पर बैठकर ऊं का 108 बार (एक माला) जाप करें। अगर आपको अधिक घबराहट होती है तो उस समय पर आंखें बन्द करके पांच बार गहरी सांसें लेते हुए ऊं का उच्चारण करें। ऊं का उच्चारण करने पर गले में कंपन्न उत्पन्न होने से थायराइड ग्रंथि पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।

पाण्डेय जी कहते हैं कि जिन बच्चों का पढ़ाई मन नहीं लगता, उनके लिए भी ऊं का उच्चारण स्मरण शक्ति बढ़ाने में मदद करता है। कुछ वैज्ञानिको ने ऊं के उच्चारण पर शोध करके निष्कर्ष निकाला कि रोजाना ऊं के उच्चारण से मस्तिष्क के साथ साथ सम्पूर्ण शरीर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं। इससे महिलाओं की इन्फर्टिलिटी भी दूर हो सकती हैं।

ओउम का उच्चारण रोजाना चालीस मिनट किया जाय तो कुछ ही दिनों में बदलाव महसूस किया जा सकता है। सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय ऊं का उच्चारण करना लाभकारी होता हैं।

चाणक्य नीति

- **कैलाश चतुर्वेदी**, कासगंज

न अस्ति कामसमो व्याधि,
न अस्ति मोहसमो रिपुः।
न अस्ति कोपसमो वहनि,
न अस्ति ज्ञानात परं सुखं।

आध्यात्मिक शब्दावली में उपदेश देते हुए चाणक्य लिखते हैं कि कामवासना के समान कोई व्याधि नहीं है, क्रोध के समान कोई अग्नि नहीं, मोह मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है और ज्ञान से बड़ा कोई सुख नहीं है । तृष्णा वैतरणी नदी के समान हैं , जिसमें से निकलना मुश्किल है और संतोष नंदन वन के समान है। आत्मबल व आत्मचिंतन को आचार्य ने उन्नति का आधार स्तंभ माना है। आत्म स्वाभिमान और आत्मिक स्वाधीनता का मार्ग इन दोनों से ही प्रशस्त होता है।

आचार्य चाणक्य विश्व प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ व अर्थशास्त्री होने के साथ-साथ आध्यात्मिक गुणों के मनीषी, साधक एवं तपस्वी थे।ऋषि चरक का पुत्र होने के नाते इनको चाणक्य कहा गया। बाद में इनकी रणनीति के कारण इन्हें कौटिल्य कहा गया। तक्षशिला विश्वविद्यालय में रहकर इन्होंने आध्यात्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया तथा उसी में अध्यापन भी किया। विश्वप्रसिद्ध रचना अर्थशास्त्र तथा चाणक्य नीति में अपना चिंतन प्रस्तुत किया है ।विकट परिस्थितियों में भी दृढ़ आत्मविश्वास एवं निरंतर पुरुषार्थ के माध्यम से चाणक्य ने अपनी उत्तम नीतियों से नंद वंश का समूल नाश करके चंद्रगुप्त को राज सिंहासन पर बैठाया तथा राष्ट्र के स्वाभिमान उसकी स्वाधीनता व संस्कृति को स्थिरता एवं सुंदृढ़ता प्रदान की । चाणक्य नीति में भौतिक व आर्थिक स्वावलंबन के साथ-साथ पारिवारिक, व्यक्तिगत, आत्मिक तथा आध्यात्मिक स्वालंबन का भी चिंतन मिलता है। स्वावलंबन की भावना को परिभाषित करते हुए कहते हैं -

अनालोक्य व्यंकर्ता,अनाथः नरः शींघ विनश्यति।

अर्थात जो व्यक्ति अपने साधनों और भौतिक शक्ति को बिना विचारे सामर्थ से अधिक खर्च करता है ऐसे व्यक्ति का समाज में स्वाभिमान कम हो जाता है ।

विज्ञानेन आत्मानं संपादयेत--------

उत्थान का मार्ग बताते हुए चाणक्य कहते हैं कि अपना कल्याण चाहने वाले प्रत्येक मनुष्य को भौतिक विज्ञान ,अध्यात्मिक ज्ञान तथा व्यवहार कुशलता को अपनी आत्मा में

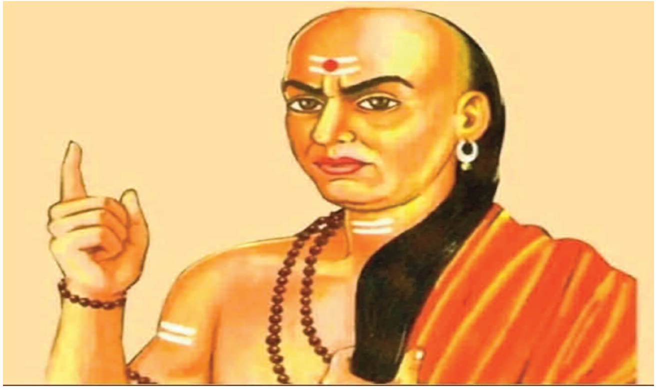

आत्मसात करना चाहिए। भौतिक विज्ञान से सांसारिक यात्रा तथा आध्यात्मिक ज्ञान से आत्मिक आनंद की यात्रा का मार्ग प्रशस्त होता है। ऐसी शक्तियों से उक्त मनुष्य जीवन के हर पथ पर विजय प्राप्त करता है। नीति व अध्यात्म के विद्वान आचार्य चाणक्य के सूत्रों में संपूर्ण राष्ट्र का कल्याण निहित है।

आचार्य चाणक्य के स्वर्णिम चिंतन ,सूत्रों व श्लोकों में धर्म, अध्यात्म, राज व्यवस्था तथा लौकिक आचार-व्यवहार से जुड़ी जीवन उपयोगी सामग्री समावेशित है। कुछ सूत्र :-

सर्वाश्च सम्पदः सर्वोपाये परिग्रहेत

अर्थात एक राजा का दायित्व है कि वह अपनी प्रजा को आत्मनिर्भरता के पथ पर ले जाए।

वि न इन्द्रो मृधो जहि

अर्थात जो आतताई एवं प्रजा को पीड़ित करने वाले हैं ,उनका समूल नाश करो।

अधमं गमय तमोयो अस्मां अधिदासति

अर्थात जो राष्ट्र की स्वाधीनता, गरिमा व संपत्ति के संहारक हैं उनको घोर अंधकार में भेजो ।

कुराज राज्येन कुतः प्रजा सुखं

अर्थात राष्ट्र के कर्णधार यदि भ्रष्ट है तो वहां की प्रजा भी सुखी नहीं रह सकती।

राज्य मूलम इन्दियजयः।

ज्ञान- विज्ञान में निष्णात आचार्य के श्रेष्ठ चिंतन में राष्ट्रीय स्वाभिमान और स्वाधीनता के अमर तत्व के दर्शन हैं ।आचार्य की पावन स्मृति को -

।। शत-शत नमन ।।

हास्य व्यंग

कमरबन्द उर्फ नाड़ा

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

मैं एक आवश्यक और महत्वपूर्ण

वस्तु हूँ,। लेकिन उसके बाद भी लोगों का ध्यान मेरी तरफ आकर्षित नहीं होता ,क्योंकि मैं छुपा हुआ रहता हूँ। जिस तरह से नीवके पत्थर दिखाई नहीं पड़ते ले किन महल के कंगूरे दिखाई पड़ते है।लोग कंगूरो की ही तारीफ करते उसी तरह से शरीर पर पहने हुए जो वस्त्र जो दिखाई देते हैं उनकी खूब प्रशंसा होती।

अरे ! यार क्या खूबसूरत शर्ट है कपड़ा कहाँ से लिया, खूब जँच रही है तुम्हारे ऊपर। पहनने वाला फूल कर कुप्पा हो जाता है। लेकिन इससे ठीक विपरीत मेरा क्या हाल होता है जो मेराउपयोगकरते है वे इस बात का प्रयत्न भी करते हैं कि मैं किसी को दिखाई ना पड़। जाँऊ

यदि मैं दिख गया तो वह व्यक्ति अक्सर हास्य का पात्र बन जाता है। यदि कोई उसका दोस्त या परिवार का.सदन. हुआ तो कान में जाकर फुस फुसायेगा तुम्हारा नाडा दिख रहा है । और वह मुझे छुपाने के लिए एकांत या टॉयलेट ढूँढने लगता है। मेरा दिल टूट जाता है मैं ही उसका पजामा या सलवार संभाले हुए हैं जिसकी की प्रशंसा हो रही है मगर अपना अपना मुकद्दर है। मैं अपने मन को समझा लेता हूँ, जैसे गुप्त दान होता है वैसे ही मुझे अपनी उपयोगिता गुप्त ही रखनी है मैं लोगों का कल्याण ही कर रहाहूँ। इसलिए जब लोग मेरा उपयोग करते हैं तो बहुत सावधानीपूर्वक करते हैं मेरे उपयोग के बाद उसे अच्छी तरह से अपने अधोवस्त्र में ही छिपा लेते हैं। कभी-कभी मुझे इस बात का दुख होता है कि मैं इतना अधिक आवश्यक और महत्वपूर्ण वस्तु होने के बाद भी लोग मेरा कहीं मेरा उल्लेख भी नहीं करते मेरा उल्लेख करना उन्हें हास्य का पात्र कोई न बना दें यह सोचकर नहीं करते।

मुझे बाँध लेंगे अपनी कमर में और अपने अधोवस्त्र में चाहे वह महिलाओं का पेटीकोट हो या अन्य पुरुषों का कछा मगर सबसे पहले बॉधने के बाद मुझे छुपाने की ही जल्दी उन्हें पड़ती है। क्योंकि मैं कमर के अधोवस्त्र में डालकर उपयोग किया जाता हूँ इसलिए लोग मुझे कमरबंद कहते हैं तथा गाँव के लोग या क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग करने वाले लोग नाड़ा कहते हैं।

मुझे छिपाते भी है और मेरा सबसे अधिक उपयोग भी करते हैं। मैं उपयोगी महत्वपूर्णइतना हूँ मेरा अन्य प्रयोग भी लोग करते हैं आवश्यकता पड़ने पर में रस्सी का काम भी आता हूँ, और यदि बोरी को बाँधना हो तो मुझे खींच कर ले जाकर बोरी केमुँह पर बाँध देते है। कहीं कपड़े सुखाने की जरूरत हो रस्सी उपलब्ध ना हो तो मुझको बॉधकर ऐसे काम चला लेते हैं।

उसके बाद भी मेरी इस तरह की उपेक्षा होती है तो बहुत कष्ट होता है मेरी जगह आप अपने को रख कर देखो तब मेरा दुख दर्द आपको समझ में आएगा

पहले तो लोग साड़ी की किनारी को निकालकर उसका उपयोग मेरे रूप में कर लेते थे लेकिन धीरे-धीरे जिस रंग का अधोवस्त्र उसी रंग का मुझे सिल दिया जाता है कमरबंद के रूप में। गाँव की बालिकायें उनके पास जब खाली समय होता है तो वह नारा बुनने का कार्य भी करती है।रील के धागे समाप्त होने पर 4G नेट देखकर होकर वह समय का सदुपयोग करने के लिए नाडा को बुनती रहती है।

आजकल कुछ ऐसे लोग भी हो गए हैं जिन्हें बाँधने में कष्ट होता है तो वह अपने अधोवस्त्र में प्लास्टिक डलवा लेते हैं ताकि मुझे बांधने का झंझट ही खत्म हो जाए ना रहेगा बांस ना बजेगी। बाँसुरी ना तो बंधा जाएगा और न लटकने का डर रहेगा। लेकिन वह यह भूल जाते हैं इलास्टिक का उपयोग वह जो करते हैं वह भी ढीली हो जाती है उस समय फिर मेरा उपयोग करते हैं और इसके ऊपर मुझे बाँध लेते हैं यदि मैं नहीं मिला तो वह पेंट का बेल्ट निकालकर बाँधते हैं। प्राचीन समय में राजा महाराजा की रानियों के लहँगे मैं इतने सुंदर रूप में मे बाँधा जाता था कि देखने लायक होता था ।सोने केतार से बुना या रेशम का बना हुआ मैं बड़े ठाठ से उनके लहंगे में रहता था और उनकी लॅहगे की शोभा व को बढ़ा देता था लेकिन जैसे ही राजे महाराजे गए रेशम के नारे भी चले गए

लेकिन आज भी कहीं कहीं जहॉ पर रंगमंच की नाटक होते हैं वहॉपर जो वस्त्र पहने जाते हैं अभी भी मैं बहुत सुंदर तरीके से बॉधकर उपयोग मेरा किया जाता है। एक नेता जी एक आम सभा में जा रहे थे कड़क दार कुर्ता कड़क दार टोपी और कड़क दार पजामा उन्होंने पहना पजामे में मैंडला हुआ था और उन्होंने उसमेंकलफ बहुत अधिक था तो अच्छी तरह से खींचा नहीं जा

रहा था उन्होंने मुझे बाँध लिया लेकिन मुझे अटकाना भूल गए और जब आम सभा पर मंच पर खड़े हुए तो लोग तालियाँ बजा कर हॅसने लगे पहले तो वह समझे कि तालिया.ःबजाकर मेरा स्वागत किया जा रहा है लेकिन जब लोग हंसने लगे और कहने लगे जो नारा भी नहीं बांध सकता वह देश को क्या चलाएगा तब मेरी समझ में आया कि मैं जो ज्यादा नखरा दिखाए उसको मैं हंसी का पात्र भी बना देता हूं।

जो लोग मुझे बहुत कस कर बांध ते हैं और जब उन्हें हंसी आती है या वह खाना बहुत अधिक खा लेते हैं पेट जब फूलता है तो मेरी अपनी सीमा समाप्त हो जाती है और आखिर मुझे बीच के दो हिस्से तोड़ने होते तब भी अधोवस्त्र खसकने का डर रहता है इधर उधर से पिन मांगते घूमते हैं जरा फिन दे दो फिन दे दो

कुछ महिलाओं ने अपना पेटिकोट बिल्कुल कमर की नाप का सिलवाना शुरू कर दिया और उसमें सिर्फ बटन लगा लेती उन्होंने मुझे मेरा पूरी तरह से बहिष्कार कर दिया लेकिन बहनों आखिर तो मैं भी एक दिन मेरी ही जरूरत पड़ेगी क्योंकि बटन जब टूट जाएगा हुक जब अचानक टूट जाएगा उस समय मुझे आप ही याद करोगी।

कुछ लोग ऐसे कंजूस होते हैं की 10 टुकड़ों को जोड़कर अपनी कमर का मुझे बना लेते हैं अब बताइए वह जो गांठ है कहीं ना कहीं कमर में चुब रहेगी बार–बार अपने पैजाम को या पेटिकोट को ऊपर नीचे खासकाते रहेंगे लेकिन नया नाडा ला कर नहीं डालेंगे जबकि में सबसे आवश्यक वस्तु मुझे सबसे मजबूत और सबसे सुंदर मेरा उपयोग होना चाहिए ,क्योंकि दिखाई नहीं पड़ता इसलिए जो चाहे वह बाँधलो सफेद पजामे के ऊपर काला नाडा कोई लाल नाडा बॉध लेता है जरा सोचो सफेद पजामे पर जब लाल नाड़ा लटके गा तो क्या सुन्दर लगेगा। मैं एक चेतावनी और दे रहा हूँ मुझे खरीदते समय इस बात का ध्यान रखना कि सूत का रंग पक्काहो नहीं तो धोते समय मेरे रंग छूटेगा और आपका पजामा या आपका पेटीकोट दूसरे रंग में रंग जाएगा।

एक आधुनिक स्त्री दूसरी स्त्री से पूछ रही थी बहन जी मॉल में जाकर नाडा माँगने मे बहुत शर्म सी लगती है वह दिखाई भी नहीं पडते कि देखकर माँग ले उसने कहा इसमें कौन सी बड़ी बात है आप न्यू मार्केट जाती हैं छोटे–छोटे बच्चे आपको नाडा बेचतः हुए मिल जाएंगे और आप को जबरदस्ती एक की जगह दो नाडों का बंडल दे देंगे आपको कुछ नहीं कहना पड़ेगा सिर्फ अपनी जेब खाली करनी पड़ेगी। कभी–कभी मेरे कारण आपस में दुश्मनी और झगड़ा नोकझोंक सभी हो जाती यदि किसी के पजामे में से मैं देख रहा हूँ तो दूसरा हँसने लगता है अरे यार नाडा लटक रहा यदि वह बेशर्म हुआ तो तुरंत उत्तर देगा बांधा हुआ है इसलिए दिख रहा है या कोई दूसरा व्यक्ति चिढ़ने वाला हुआ तो आपस में झगड़ा भी होने लगता।

अंत में मैं इतना ही कहना चाहता हूं मेरा उपयोग करो समझ के साथ होशियारी के साथ मेरी उपेक्षा बिल्कुल मत करो मजबूत धागे का बना हुआ लेकर मुझे उपयोग मैं लाओ

बेचने वालों से जब लोग नारतेंखरीदते हैं तो इधर उधर देखते हैं कोई हमें देख तो नहीं रहा अरे यार कोई चोरी की चीज तो खरीदनी है जिसको खरीदने में शर्म लग रही है जल्दी से पैसे दे और नाले का बंडल अपनी थैली में डाल लेती जब मेरी इतनी उपेक्षा होती है तो मैं अंदर तक हिल जाता हूँ स्वार्थी दुनिया हो गई है मैं उनकी शरीर की रक्षा करता हूँ उन्हें सुंदरता दिलाता हूँ उसके बाद वह लोग मेरे साथ इस तरह का व्यवहार करते हैं

चलो छोड़ो इन सब बातों को और आराम से सावधानी से मेरा उपयोग आप करो मैं आपकी सहायता करता रहूँगा। अरे एक बात तो मैं भूल ही गया जब कोई हास्य नाटक आता है या फिल्म देखते हैं तो मेरा ही उपयोग करते हैं हास्य पैदा करने के लिए, थुलथुल शरीर बढ़ी हुई तोंद और लटकता हुआ मे मैं उदास लोगों को भी हँसा देता हूँ। लोग फिर भी मुझे भूल जाते हैं। क्या करें दुनिया स्वार्थी हो गई। नवजात शिशु के लिए उनके अधोवस्त्र में में सबसे अधिक काम आता था लेकिन पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव में उन उन वस्त्रों का पहना ना ही बंद कर दिया जिसमें मेरा उपयोग होता था। डायपर का उपयोग अधिक करने लगे जबकि वह बहुत नुकसानदायक है लेकिन बच्चों को डायपर पहनाना भी तो माँके लिए के लिए सुविधाजनक है।

मैं पूरी तरह से अपने अस्तित्व को बचाने का प्रयास करता रहता हूँ। मेरा आप लोगों से आग्रह है मेरा अस्तित्व बचाने में सहयोग करें

आयाम चाहिए ....

- शैलेन्द्र चतुर्वेदी, फिरोजाबाद

रुठी हुई ज़िन्दगी को , संजीवनी आयाम चाहिए।
करोड़ों बेरोजगार हाथों को रोजगार चाहिए ।
सुप्त संतप्त इंसान को उदबोधक राग चाहिए।
दहकते हुए दिलों को अब न और आग चाहिए।
कानूनी इंसाफ को अब और ना कोई गुनहगार चाहिए।
पीड़ित, शोषित मानवता को थोड़ा सा प्यार चाहिए।
अंधेरे झोपड़ों में समानता का सूरज चाहिए।
दहकता हुआ न आग और न चांद सूरज चाहिए।
धर्म अर्थ काम मोक्ष बस ये ही रीति–रिवाज चाहिए।
साम, दाम दण्ड भेद पर शासक की आवाज़ चाहिए।
भूखी, प्यासी, जनता को अब ना आश्वासन चाहिए।
सुख समृद्धि सौख्य से पूरित शांतिमयी प्रशासन चाहिए।।

कहानी

।।वारिस।।

- **श्रीमती उषा चतुर्वेदी**, भोपाल

अचानक मोबाइल की रिंगटोन बजने लगी।समय देखा सुबह के 5बजे थे।इतनी सुबह किसका फोन हो सकता है? घबराहट सी होने लगी, मोबाइल उठाया हाथ मेरे कांपने लगे हेलो उधर से दीदी की आवाज सुनाई पड़ी सुनंदा पापा को हॉस्पिटल में एडमिट कर दिया आईसीयू में है। डॉक्टरों का कहना है कुछ हॉट प्रॉब्लम है। एक बार आ जाओ अस्पताल जाते-जाते भी कह रहे थे सुनंदा से मुझे कुछ बात करनी है उससे कहो अंतिम बार आकर मिल ले नाराजी यहीं समाप्त करें। पापा की तस्वीर आंखों के सामने घूमने लगी मैं रूआँसी होकर बोली आतीहूँ। फोन कट गया।

दीदी का फोन लगातार बहुत दिनों से आ रहा था, कानपुर आ जाओ पापा तुम्हें बहुत याद करते हैं। बस एक ही बात कहते हैं। सुनंदा से बहुत जरूरी बात करनी है।

मगर संयोग कुछ ऐसा हुआ ,कानपुर जाना नहीं हो पाया।

सोमेश भी उठ गए थे, पूरी बात उन्होंने सुन ली थी। उन्होंने कहा ठीक है 9:00 बजे की फ्लाइट है तुरंत चली जाओ।

मैं कानपुर के लिए चल पड़ी जिसे छोड़े मुझे8 साल हो चुके थे। साथ में मुन्नी भी गई। जहाज के उड़ते हैं मैंने सिर सीट पर टिकाया और आंखें बंद कर ली। आंख बंद करते ही बीता हुआ कल आंखों के सामने चलचित्र की तरह घूमने लगा।

मैं पापा की बहुत लाडली थी, मुंह से जो निकलता वह पूरा होता था। मुझे याद आ रहा था मुझे साइकिल सिखाने के लिए पापा मेरे साइकिल के पीछे पीछे भागते थे। घर से बाहर जाते साथ में ले जाते। स्कूल से लौटने पर पढ़ाई के बारे में बात करते हैं पढ़ाते और रिजल्ट आने पर मेरा घर आने तक इंतजार करते। जाने क्या बात थी दादी और मम्मी मुझसे कुछ खींची खींची से रहती थी .।कुछ भी कहो उनके चेहरे पर कभी हंसी नहीं देखी। एक बार मैं स्कूल से आई पापा घर पर नहीं थे मैं जीत कर शील्ड लेकर आई थी । मम्मी को दौड़ कर दिखाई, मम्मी ने हाथ में से लेकर उसे स्टोर में रख दिया। कहां तक संभालूँ यह लकड़ी के टुकड़े।

मेरी खुशी काफूर हो चुकी थी।

अपने कमरे में आकर बैठ गई तभी कानों में दादी और मां की आवाज सुनाई पड़ी कृष्ण मोहन की एक पल की चूक और भावुकता का परिणाम यह सुनंदा है ना जाने कब टलेगी । दादी बोली मुझे देखकर ही गुस्सा आता है । कृप्पामोहन का मुंह देख कर चुप हो जातीहूँ। अब मुझे समझ में आया दादी और मम्मी का उपेक्षा पूर्ण व्यवहार।

मेरे साथ ऐसा क्यों तथा दीदी के साथ प्यार भरा क्यों।

मन में फैसला किया पापा से सारी बात पूछूंगी। मुझे मालूम पड़ गया मैं इस घर की बेटी नहींहूँ।

मन में काफी उथल-पुथलहोरहीथी,क्या करूँ कहाँ जाऊँ। पापा आए खाने को बुलाया मगर मैं नहीं गई कह दिया भूख नहीं, पापा को चेहरा देखकर कुछ महसूस हुआ बोले क्या बात है मैंने कहा कुछ नहीं।

बहुत विचार किया तथा 1 दिन पापा से बोली मुझे हॉस्टल में रहकर पढ़ना है कंपटीशन की तैयारी भी वहीं से करूंगी घर में ठीक से पढ़ नहीं पाती। पापा ने मुझे हॉस्टल भेज दिया।

दादी और मां उस दिन बहुत खुश थी उनके जीवन का काँटा निकल गया। मैं हॉस्टल में पढ़ती रही छुट्टियों में कुछ ना कुछ बहाना बना देती घर ना जाती। पढ़ाई पूरी हो गई तथा सर्विस करने के लिए जगह-जगह आवेदन देने लगी। दिल्ली में मेरी सर्विस लग गई और मैं दिल्ली आ गई अब तो छुट्टी ना मिलने का बहाना था करीब 3 ,साल गुजर गए घर नहीं गई।

सोमेश मेरी साथ में ही सर्विस करते थे, उनकी मां एक वृद्धा आश्रम चलाती थी। धीरे-धीरे हम एक दूसरे के करीब आ गए और मैंने कोर्ट मैरिज कर ली। घर पर समाचार भेज दिया। दीदी को जरूर बुरा लगा कम से कम पापा और मुझको बता देती। 5 साल हो गए दीदी बराबर मेरे संपर्क में थी ।,वहां के समाचार देती रहती थी।।

पापा की बीमारी के समाचार भी मिलते रहते थे ,मगर मेरे मन में पता नहीं क्यों पापा के प्रति वितृष्णा हो गयी थी। मैं पापा की भूल का परिणाम थी ।मैं यही सोचती थी। कृपया अपना-अपना बेल्ट बांधे सुनकर मेरी तंद्रा टूटी।

मुझे दूर से एयरपोर्ट पर इन्तजार करती हुई दीदी दिखाई दिखी। पास पहुँचते हीदीदी ने गले से लगा लिया और मुन्नी को गोद में उठा लिया।

अस्पताल पहुंची 8 साल बाद पापा को देख रही थी हड्डी का ढांचा रह गयेथे, मुझे देखकर उनकी आंखें भर आई। दीदी से कहा बाहर जा मुझेबात करनी है। दीदी ने कहा' पापा आप को डॉक्टर ने बोलने से मना किया है। दीदी बोली सुनंदा मन की गलतफहमियां निकाल दो पापा कभी गलत नहीं थे और ना हैं ।

पापा और मम्मी की जब शादी हुई तो बहुत दिनों तक कोई संतान नहीं हुई दादी के ताने सुन सुनकर मां हमेशा दुखी रहने लगी दादी पापा से कहती दूसरी शादी कर लो ताकि वारिसपैदा हो जाय वंश आगे कैसे चलेगा, पापा तैयार नहीं थे करीब 8 साल बाद मैं पैदा हुई पर दादी संतुष्ट नहीं थी। वह चाहती थी लड़का पैदा हो जो आगे भी वंश चलाएं। मैं 4 साल की रही हूं तभी से दादी का फिर से अलाप शुरू हुआ दूसरी शादी करो। अंत में यह समझौता हुआ कि एक लड़का गोद ले लेते हैं। पापा अनाथ आश्रम जाकर रजिस्ट्रेशन करा कर लौट रहे थे। तभी रास्ते में तुमने पापा के पैर पकड़ लिए बाबा मुझे ले चलो मम्मी कह रही थी बाबा आएंगे तो वह ले जाएंगे, पापा हक्के बक्के रह गए। तभी एक दुकानदार ने बताया एक महिला इस बच्ची को यहाँ ,बैठा गई थी, तथा कह गई थी इसको देखते रहना इसके पिताजी आएंगे इसे ले जाएंगे मुझे काम है। तब से यह बच्ची यहाँ बैठी है आप निकले तो यह समझी आप ही उसके बाबा हैं, जाने तुम्हारी आंखों में कैसा ?,आकर्षण था ,चेहरे पर इतना भोलापन था कि पापा तुम्हें घर ले आए। मम्मी और दादी को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आई। पापा ने बहुत समझाया पर ना समझी उन्होंने कहा अनाथ आश्रम में जब लड़का आ जाएगा मैं ले आऊंगा तुम्हें वारिस मिल जाएगा। पापा दोबारा आश्रम नहीं गए मम्मी और दादी तुम्हे देखकर चिढ़ जाती। पापा तुम्हें दुगना प्यार करने लगे। दादी तुम्हें देखकर व्यंग्य करती कहती लो आ गई कोठी की बारिस , कुटुंब की वंश बेल

अब मेरी समझ में आया दादी ने कहा था एक क्षण की चूक और भावुकता के कारण यह सुनंदा है मेरी गलतफहमी दूर हो चुकी थी मैं पापा के गले से मिलकर रोने लगी उनकी आंखों से आंसू निकल रहे थे। मैंने पापा से कहा मैं हूं आप की वारिस अब मैं आपको दिल्ली लेंचलूंगी वही इलाज कर आऊँगी यहां कोई नहीं है आपको देखने वाला मां और दादी आपको छोड़कर कब की जा चुकी। दीदी बेचारी अकेली है। बहुत सालों से जबसे जीजाजी गए और ससुराल वालों ने निकाल दिया

पापा ने यह बात सुनी अथवा नहीं उनकी गर्दन एक तरफ लुढ़क गई। मैं संभल चुकी थी मैंने दीदी से कहा किसी रिश्तेदार को बुलाने की जरूरत नहीं मैं हूं पापा की वारिस मैं अंतिम संस्कार करूंगी। और अपना दायित्व निभाऊँगी सोमेश भी अगली फ्लाइट से आ गए उन्होंने भी मेरा साथ दिया। मैं पापा के स्थान पर पापा का चित्र लेकर दिल्ली वापस आ गई।

आज पहली बार

- **शिविका चतुर्वेदी**, भोपाल

आज एक दस्तक हुई
मैंने जैसे ही दरवाजा खुला मेरी खुद से गुफ्तगू हुई
मैं सोच में डूब गई
इन अंजान चेहरों में
मैं कहां खो गई
मैं क्या खोजती हूं
क्या सोचती हूं
क्यों जानना है
क्या पहचानना है
और आखिर में एक अनजान की तरह क्यों कुछ नहीं मनाना है
सवाल बहुत है
जवाब खोज रही हूं
आज पहली बार मैं खुद को कोस रही हूं
आज एक दस्तक हुई
मैंने जैसे ही दरवाजा खोला
मेरी खुद से गुफ्तगू हुई
मैं सोच में डूब गई
उनकी नजरों में मैं कहां खो गई
अब खुद को ही एक रंगमंच की कठपुतली लगती हूं
डोर मेरे हाथ में ही होती है
पर फिर किसी ना किसी को थमा देती हूं
कभी बर्फ है
कभी पानी में पिघल जाते हैं
और यही लोग मौसम की तरह बदल जाते हैं
आज एक दस्तक हुई
मैंने जैसे ही दरवाजा खोला मेरी खुद से गुफ्तगू हुई
मैं सोच में डूब गई
इन अंजान चेहरों में मैं कहां खो गई
आज पहली बार खुद को
इन शब्दों के रूप में
इस कागज़ के टुकड़े पर छाप रही हूं
आज मैं खुद की गलतियां नाप रहीं हूं
गलतियां ऊंची जा चुकी है
पर अब इन्हें बांधने वाली डोर मिल गई है
कोशिश करूंगी यह गलतियां और उनकी ना जा पाए
और एक बत्ती की तरह मेरी गलतफहमी भी बुझ जाएं

छोछक और डाला (भात) देने की परंपरा क्यों?

- सुबोध चतुर्वेदी

विधिपूर्वक विवाहित पुत्री के पुत्र होने पर उस बच्चे के लिए मामा और नाना की ओर से वस्त्र, आभूषण आदि भेंट किए जाते हैं। इस अवसर पर लड़की, दामाद तथा ससुराल के अन्य मान्य लोगों सास-ससुर आदि के लिए भी वस्त्र और भेंट के रूप में धन आदि दिया जाता है। समाज में इस परंपरा को 'छोछक के नाम से जाना जाता है। यह परंपरा बच्चे के नामकरण वाले दिन पूरी की जाती है। अधिकांश वरों में संतान चाहे पुत्र हो या पुत्री माता के मायके वाले छोछक अवश्य देते हैं। ठीक इसी प्रकार की एक परंपरा पुत्री के बेटे या बेटी के विवाह के समय मामा और नाना की ओर से निबाही जाती है। इस परंपरा को 'डाला(भात)' देना कहते हैं। डाला देने में कन्या के मामा-नाना कन्या के लिए तो वस्त्र आभूषण तथा नकद रकम देते ही हैं, ससुराल पक्ष के अन्य लोगों के लिए भी वस्त्र एवं भेंट आदि दी जाती है। इसी प्रकार भांजे की शादी में भी डाला(भात) दिया जाता है।

डाला(भात) के अतिरिक्त मामा आदि भांजी या भांजे की शादी में अनेक महत्त्वपूर्ण रस्में निभाते हैं। जैसे भांजी को कुंडल पहनाना एवं बारात आने से पहले की रात्रि में प्रातः चार बजे कन्या को स्नान कराना आदि। जहां तक छोछक एवं भात की परंपरा के कारण का प्रश्न है, तो शास्त्र के अनुसार इसके मूल में पिता की संपत्ति में से पुत्री को हिस्सा देने की भावना ही इसका प्रधान कारण है। पुरुष प्रधान भारतीय समाज में एक लंबे समय तक पिता की संपत्ति पर पुत्र का अधिकार माना जाता रहा है। कन्या का विवाह कम उम्र में कर दिए जाने के कारण उसके जीवनयापन का भार पति पर होता है। अतः कन्या को पिता की संपत्ति से सीधे-सीधे हिस्सा न देकर उसके विवाह में धन लगाने का पिता और भाइयों का कर्त्तव्य निर्धारित किया गया है। मनु ने व्यवस्था दी है कि

यथैवात्मा तथा पुत्रः पुत्रेण दुहिता समा।

अर्थात जैसे आत्मा और पुत्र समान हैं, वैसे ही पुत्र और पुत्री समान हैं।

– मनुस्मृति 9/130

अतः मनु ने दूसरी व्यवस्था दी है कि पिता की संपत्ति के बंटवारे का पुत्रों की तरह पुत्री को भी हिस्सा दिया जाना चाहिए

स्वे स्वेभ्योऽशेभ्यस्तु कन्याभ्यः प्रद्युभ्रतरः पृथक्।
स्वात्स्वादंशाच्चतुर्भागं पतिताः स्युरदित्सवः॥

–मनुस्मृति 9/118

अर्थात कन्या (अविवाहित बहनों) को सभी भाई अपने भागों में से अलग दें। जो भाई बहन के विवाह के लिए अपने धन का चौथा भाग नहीं देते। वे पतित होते हैं। आगे चलकर मनु ने बहन की कुमारी कन्याओं के लिए भी भाइयों द्वारा प्रीतिपूर्वक धन भाग देने की बात कही है

यास्तासां स्युर्दुहितरस्तासामपि यथार्हतः।
मातामह्या धनात्किंचित्प्रदेयं प्रीतिपूर्वकम्॥

– मनुस्मृति 9/193

अर्थात बहन की कुमारी कन्याओं को भी नानी के धन में से अपनी प्रसन्नता से उनके संतोष के लिए कुछ धन देना चाहिए।

ज्ञातव्य है कि प्राचीन काल में कन्या का विवाह बाल्यावस्था में ही कर दिया जाता था अधिकांश परिवारों में तब तक पिता की संपत्ति का बंटवारा नहीं होता था। अतः कन्या के पुत्र –पुत्री होने के अवसर तक भाइयों के समर्थ हो जाने के कारण नानी की संपत्ति में से बहन के बच्चों के लिए धन देने की व्यवस्था बड़ी स्वाभाविक थी।

बहन–भाई यूं भी एक ही पिता की संतान होने के कारण उनमें आत्मीयता स्वाभाविक है, अतः बहन पर खर्चे का समय आने पर भाई द्वारा उसके सहयोग की भावना भी इस कार्य में निहित है। विवाह–शादी जैसे अधिक खर्च के मौके पर बहन अपने आपको अकेली न समझे, उसे अपने मायके वालों से वैर्य और साहस मिलता रहे। इसी भावना से भात और छोछक की परंपरा पुराने समय से अब तक लगातार चली आ रही है।

समय

- **नीलम चतुर्वेदी**, तरसोखर/लखनऊ

भगवान शिव हिंदू धर्म में एक अत्यंत लोकप्रिय देवता हैं। उनकी सरलता, क्रोध और उल्लास ने सदियों से दुनिया भर के भक्तों को आकर्षित किया है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, शिव और उनकी पत्नी पार्वती हिमालय के बर्फ से ढके पहाड़ों में निवास करते थे। उस युग से संबंधित सभी कहानियों में, हिंदू देवताओं को राजसी प्राणियों के रूप में चित्रित किया गया है, जो अलंकृत महलों में निवास करते हैं, नौकरों से घिरे एक शानदार जीवन शैली जीते हैं। लेकिन भगवान शिव की जीवनशैली अन्य देवताओं से बिल्कुल अलग थी और यही वह अंतर था जिसने एक दिन नारद का ध्यान आकर्षित किया, जो यात्रा करने वाले संत थे, जो लोगों के बीच झगड़े पैदा करने की प्रवृत्ति रखते थे। नारद हिमालय में शिव के निवास पर प्रकट हुए। वह पार्वती से मिले, और अपनी विशिष्ट शैली में संत ने उन्हें उकसाना शुरू कर दिया। आप शिव से अपने लिए एक सुंदर महल बनाने के लिए क्यों नहीं कहती? इन ठंडी गुफाओं में रहकर आपकष्टमय जीवन क्यों व्यतीत कर रही हो? जब अन्य सभी देवता भव्य महलों में रहते हैं और नौकरों और सुंदर नौकरानियों से घिरे एक भव्य जीवन शैली का नेतृत्व करते हैं, तो आप एकमात्र अपवाद क्यों हैं और इतना कठिन जीवन जीते हैं? नारद की बातों में आकरपार्वती तुरंत शिव के पास गईं और उनसे उनके लिए एक महल बनाने का अनुरोध किया।

शिव ने कहा, मुझे कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन वास्तव में, यह 'समय' है जो यह तय करता है कि किसी व्यक्ति को कहां और किस परिस्थिति में रहना चाहिए। और 'समय' के हिसाब से हम सही जगह पर हैं। किसी के अहंकार से प्रभावित होकर समय की इच्छा के विरुद्ध जाना बुद्धिमानी नहीं है।

पार्वती ने उत्तर दिया, आप भगवान हैं! सारी दुनिया आपकी पूजा करती है और आपके वर्चस्व को नमन करती है! 'समय' आपसे बड़ा नहीं हो सकता। सौम्यता से मुस्कुराते हुए, शिव ने उत्तर दिया, नहीं, प्रिय, तुम गलत हो। ईश्वर वास्तव में मन की उच्चतम अवस्था है जिस तक कोई व्यक्ति पहुँच सकता है। लेकिन आखिरकार, वह सिर्फ एक इंसान है। और चाहे वह एक इंसान हो, या चाँद और सितारे, या उस मामले के लिए कुछ और, आखिरकार, सभी 'समय' द्वारा नियंत्रित होते हैं।

लेकिन पार्वती झुकने के मूड में नहीं थीं। उसने जोर देकर कहा, मुझे समय के बारे में इन सभी बातों में कोई दिलचस्पी नहीं है, मुझे एक महल चाहिए, बस इतना ही! मुझे बस इतना पता है कि अगर आप कुछ करने की ठान लेते हैं तो 'समय' आपके रास्ते में बाधा नहीं डाल सकता है।

पार्वती को समझाने में असमर्थ, शिव ने उनकी इच्छा को स्वीकार कर लिया और उनके आदेश पर एक शानदार महल का निर्माण शुरू हुआ। पार्वती प्रफुल्लित थी। समय के साथ, महल लगभग तैयार हो गया था। मजदूर अब महल को अंतिम रूप दे रहे थे, जिसके बाद शिव और पार्वती जल्द ही अपने महलनुमा घर में निवास करेंगे। लेकिन, जाहिर तौर पर 'समय' की अन्य योजनाएँ थीं। किन्हीं अज्ञात कारणों से, महल के अति सुंदर नक्काशीदार खंभे उखड़ने लगे, और खूबसूरती से सजी हुई दीवारें, जटिल रूप से डिजाइन की गई छत के साथ-साथ नीचे गिर गईं। कुछ ही समय में, महल मलबे के ढेर में ढह गया था। शिव आसन्न त्रासदी से अवगत थे, इसलिए वे महल की तबाही से बेफिक्र रहे। हालाँकि, पार्वती को इस घटना से गहरा सदमा लगा।

पार्वती ने हठपूर्वक यह मानने से इनकार कर दिया कि महल के ढहने के पीछे 'समय' ही एकमात्र कारण था। वह इस तथ्य से परेशान थी कि मुहूर्त (ज्योतिषीय रूप से अनुकूल मानी जाने वाली अवधि) को ध्यान में रखे बिना निर्माण कार्य शुरू हो गया था। पार्वती अपना महल बनाने की जल्दबाजी में यह नहीं समझ पाईं कि मुहूर्त भी समय का दूसरा रूप है। लेकिन शिव पार्वती को कैसे मना सकते थे? जब महल बनाने का सही 'समय' नहीं था, तो उसके निर्माण की 'शुभ घड़ी' कैसे हो सकती थी? इस गूढ़ सत्य से अवगत होने के बावजूद, शिव ने अपनी सलाह रखने

का फैसला किया। पार्वती के निर्देश पर, एक शुभ मुहूर्त चुना गया और एक बार फिर महल का निर्माण कार्य शुरू हुआ। अंत में, वह दिन आ गया जब महल पूरा हो गया और कब्जा करने के लिए तैयार हो गया। पार्वती बहुत खुश थीं, लेकिन इस बार, वह कोई जोखिम नहीं लेना चाहती थीं। उसने पूजा करने के लिए एक पंडित को बुलाया। पूजा के साथ, यह दक्षिणा (ब्राह्मणों को उनकी सेवाओं के लिए दिया जाने वाला शुल्क या उपहार) का समय था। प्रथा के अनुसार, एक ब्राह्मण अपनी दक्षिणा के रूप में कुछ भी मांग सकता था, और उसे मना नहीं किया जा सकता था। इसलिए, जब पार्वती ने ब्राह्मण से पूछा कि वह अपनी दक्षिणा के रूप में क्या चाहते हैं, तो वह कुछ समय के लिए चुप रहे और फिर बोले, सभी को स्तब्ध छोड़कर। उन्होंने कहा, मुझे यह महल बहुत पसंद है। मैं अपनी दक्षिणा के रूप में यही चाहूँगा! पार्वती चकित थीं और उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि उन्होंने अभी क्या सुना है। उसके हाथों में रखी मिठाई की थाली फिसल कर फर्श पर गिर गई। उन दिनों, एक ब्राह्मण के लिए अपनी सेवाओं के लिए आडंबरपूर्ण उपहारों की मांग करना असामान्य था, पूरे महल की बात तो दूर! लेकिन यह ब्राह्मण जाहिर तौर पर अलग था! पार्वती को दुख और निराशा हुई एवंउन्होंने तुरंत महल छोड़ दिया और ब्राह्मण की मांग को पूरा करने के लिए शिव को छोड़ दिया।

शिव, हालांकि इस घटना के बारे में जानते थे, अपनी प्यारी पत्नी को व्याकुल और दुखी देखकर सहन नहीं कर सके। उसने उसे समझाने का प्रयास किया और स्नेह भरे स्वर में कहा, मैंने तो पहले ही कहा था कि सब कुछ 'समय' के अधीन है। इसके खिलाफ जाकर किसी का कुछ हासिल नहीं होता। तो, आइए हम एक महल में रहने का सपना देखना बंद करें और इन अद्भुत गुफाओं में अपने आनंदमय जीवन को फिर से शुरू करें।

पार्वती ने हठपूर्वक अपने सपनों को जाने देने से इनकार कर दिया। इसके बजाय, उसने कहा, अगर 'समय' वास्तव में इन घटनाओं के लिए ज़िम्मेदार है, तो आप क्यों नहीं जाते और 'समय' को अपनी चाल बदलने के लिए कहते हैं? आखिर कौन आपकी अवज्ञा कर सकता है?

एक बार फिर पार्वती को समझाने का प्रयास करते हुए, शिव ने समझाया, समय अपने कारणों और अंकगणित के अनुसार अपनी प्रगति निर्धारित करता है। इसने कभी भी किसी के आदेश या किसी के पक्ष में अपने कदम नहीं बदले हैं। इसलिए ऐसी अपेक्षाएं रखना व्यर्थ है। हालाँकि, पार्वती अड़ी थीं और कारण देखने से इनकार कर दिया। एक महलनुमा घर की उसकी माँग को स्वीकार करते हुए, शिव को एक बार फिर उसकी इच्छा के आगे झुकना पड़ा। यह निर्णय लिया गया कि एक बार महल तैयार हो जाने के बाद, शिव 'समय' के पास जाएंगे और इस अनुरोध के साथ कि वह अपने पक्ष में कदम बढ़ाएंगे ताकि वे और पार्वती बिना किसी दुर्घटना के महल में रह सकें।

एक बार फिर, नए महल का निर्माण जोरों पर शुरू हुआ और जल्द ही यह कब्जा करने के लिए तैयार था। जैसा कि तय किया गया था, अब शिव के लिए 'समय' का दौरा करने और अपनी प्रगति को बदलने का अनुरोध करने का समय था। जाने से पहले उन्होंने पार्वती को प्यार से देखा और कहा, प्रिय! जैसी आपकी इच्छा थी, अब मैं आपके अनुरोध के साथ 'समय' के दर्शन करने जा रहा हूं। लेकिन याद रखना, अगर 'वक़्त' ने हमारी विनती नहीं मानी, तो हम महल में आग लगा देंगे, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि तुम्हारा सपना एक बार फिर चूर-चूर हो। इसलिए, यदि 'समय' मेरे अनुरोध को स्वीकार नहीं करता है, तो मैं तांडव नृत्य (विनाश का नृत्य) करूँगा। जब आप मुझे नाचते हुए देखते हैं, तो इसे एक संकेत के रूप में लें कि 'समय' ने मेरे अनुरोध को अस्वीकार कर दिया है और महल में आग लगा देना।

पार्वती ने चुपचाप सहमति में सिर हिलाया। अगली सुबह, शिव ने 'समय' का दौरा किया। उन्होंने पार्वती की एक महल में रहने की इच्छा के बारे में 'समय' से अवगत कराया और ईमानदारी से अनुरोध किया कि वह अपनी प्रगति को बदल दें ताकि उनकी पत्नी अपने सपने को पूरा कर सकें। उसकी बात को ध्यान से सुनने के बाद, 'समय' ने उत्तर दिया, मैं आपके अनुरोध को कैसे ठुकरा सकता हूँ, मेरे भगवान? वैसे मेरी एक ही शर्त है। यदि आप अपना प्रसिद्ध तांडव नृत्य मेरे लिए करते हैं, तो मैं अपनी चाल बदल दूंगा। अब शिव क्या कर सकते थे? उन्होंने तुरंत अपना तांडव नृत्य करना शुरू कर दिया। जब पार्वती ने नृत्य की थाप सुनी तो उन्होंने सोचा कि 'समय' ने उनके अनुरोध को अस्वीकार कर दिया है। भारी मन से उसने नवनिर्मित महल में आग लगा दी। इसलिए, भले ही 'समय' ने अपनी प्रगति को बदलने के लिए सहमति व्यक्त की थी, जो घटना अंततः घटित हुई थी, वह 'समय' की प्रगति के अनुसार घटित होने वाली थी।

शिक्षाः- मानव जीवन में 'समय' के महत्व को पहचानने से बड़ा कोई ज्ञान नहीं है। यदि कोई व्यक्ति इसे समझने लगे तो वह खुशी और सफलता से भरा जीवन व्यतीत कर सकता है। व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि हर चीज का एक सही समय होता है। और जो ठीक-ठीक जानता है कि कब आगे बढ़ना है, पीछे हटना है, रुकना है, तेज चलना है, अधिक मेहनत करनी है या थोड़ा आराम करना है, वह अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करता है। एक व्यक्ति की इच्छाएँ — और यहाँ तक कि उसके अथक प्रयास — जो 'समय' के विरुद्ध जाते हैं, सकारात्मक परिणाम नहीं देते हैं। महान लोगों ने 'समय' की धारा के साथ बहकर ही अपने जीवन में अभूतपूर्व सफलता का अनुभव किया है। अतः यदि आप भी जीवन में महानता प्राप्त करना चाहते हैं तो 'समय' का ज्ञान प्राप्त करें।

शक्ति पीठ पीताम्बरा (दतिया)

- चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

नगरी तुम्हारी बड़ी प्यारी, बहुत प्यारी है माँ,
पूरी जग को तू प्यारी, बड़ी न्यारी है माँ।
जय पीताम्बरा माँ, सुखदायिनी माँ।

माँ पीताम्बरा की जय-जय कार यानि चर्चा हो रही है, दतिया शहर की इस शहर की मान्यता धार्मिक शहर के रूप में है, क्यूंकि यहाँ विभिन्न देवियों का वास है। बुंदेलखंड का दतिया एक ऐतिहासिक और लोकप्रिय तीर्थस्थल है। यह झाँसी से 16 किलोमीटर दूर ग्वालियर के पास उत्तर प्रदेश की सीमा पर स्थित है। पहले समय में दतिया को देतवत की राजधानी माना जाता था। यहाँ का पुराना इलाका चारों तरफ से पत्थर की दीवारों से घिरा हुआ है। जिसमें बहुत सारे महल और बगीचे बने हुए हैं। 17वी शताब्दी में बना हुआ वीर सिंह महल उत्तर प्रदेश की बेहतरीन इमारतों में से एक है। यहाँ का शक्तिपीठ भारत के महत्वपूर्ण शक्तिपीठों में से एक है। हर साल यहाँ लाखों की तादाद में श्रद्धालु आते हैं। पहले दतिया मध्य प्रदेश राज्य में एक रियासत था, किन्तु अब यह एक स्वतंत्र जिला है। दतिया की स्थापना 1549 में हुई थी। 1629 में राओ भगवान राओ ने दतिया और बरौनी को अपने पिता और ओरछा के शासक राजा वीर सिंह देव से प्राप्त किया और अपना शासन स्थापित किया। यहाँ पहले शासक परिवार को महाराजा राओ की उपाधि से सम्मानित किया जाता था, लेकिन बाद में अंग्रेजी हुकूमत ने 1865 में महाराजा की उपाधि को सिर्फ वंशानुगत के रूप में मान्यता दी। दतिया शहर अपने मंदिरों के लिए बहुत प्रसिद्द है। माँ पीताम्बरा पीठ तो दतिया का पर्यायवाची बन गया है। मैंने तो यहाँ तक देखा है कि जिस समय ट्रैन दतिया स्टेशन से निकलती है। उसमें बैठे यात्री जय माँ पीताम्बरा कह कर, हाथ जोड़ कर स्टेशन से ही प्रणाम कर अपनी हाजरी लगा देते हैं। श्री पीताम्बरा पीठ मध्य प्रदेश राज्य के दतिया शहर में स्थित एक हिन्दू मंदिर परिसर (एक आश्रम सहित) है। यह कई पौराणिक कथाओं के साथ, वास्तविक जीवन में भी लोगों कि तपस्थली है। यहाँ स्थित श्री वनखंडेश्वर शिव के शिवलिंग को महाभारत के समकालीन के रूप में अनुमोदित किया जाता है। यह मुख्य रूप से देवी माँ को समर्पित आराधना स्थल है।

पीताम्बरा पीठ कि स्थापना एक सिद्ध संत,जिन्हें लोग स्वामी जी महाराज कह कर पुकारते थे, ने 1935 में दतिया के राजा शत्रुजीत सिंह बुंदेला के सहयोग से किया था। कभी इस स्थान पर शमशान हुआ करता था। श्री स्वामी महाराज ने बचपन से सन्यास ग्रहण कर लिया था। कोई नहीं जानता कि वह कहाँ से आये थे या उनका नाम क्या था। यह स्वामी जी परिव्राजकाचार्य दंडी स्वामी थे और एक स्वतंत्र अखंड ब्रम्हचारी के रूप में काफी समय तक रहे। उन्होंने मानवता और देश दोनों के कल्याण के लिए कई अनुष्ठानों और साधनाओं का नेतृत्व किया।

श्री पीताम्बरा पीठ, बगलामुखी के सबसे प्रसिद्द मंदिरों में से एक है, जो 1920 के दशक में स्वामी जी महाराज द्वारा स्थापित किया था। उन्होंने आश्रम के अंदर धूमावती देवी के मंदिर की भी स्थापना की थी। यह अपने आप में देश का इकलौता मंदिर है। माँ धूमावती और माँ बगलामुखी दस महाविद्याओं में से दो हैं। इसके आलावा आश्रम के क्षेत्र में परशुराम जी,हनुमान जी,काल भैरव और अन्य देवी देवताओं के मंदिर बने हुए हैं।

माँ पीताम्बरा एवं माँ बगलामुखी का स्वरुप रक्षात्मक है। पीताम्बरा पीठ मंदिर के साथ एक सत्य तथ्य भी जुड़ा हुआ है। सन 1962 में जब चीन ने भारत पर हमला किया था और अन्य देशों से भारत को मदद नहीं मिल पा रही थी तब किसी ने पंडित नेहरू को स्वामी जी महाराज से मिलने को कहा। उस समय नेहरू जी दतिया आये और स्वामी जी महाराज से मिले। महाराज ने नेहरू जी को यजमान बना कर 5 कुंडीय हवन किया था। यज्ञ के समापन के ९वे दिन नेहरू जी को संयुक्त राष्ट्र संघ से खबर मिली कि चीन ने आक्रमण रोक दिया था। ११वे दिन यह खबर मिली कि चीन ने अपनी सेना को वापस बुला लिया है। मंदिर में वह यज्ञशाला आज भी बनी हुई है। इसी तरह 1965 एवं 1971 के भारत- पाकिस्तान युद्ध के दौरान भी यहाँ गुप्त रूप से यज्ञ और साधनाएं करवाए गए थे।

ऐसी धारणा है कि राजनैतिक सत्ता में रूचि रखने वाले लोग यहाँ बहुत आते हैं। ऐसी धारणा है कि यहाँ मन से मांगी हुई मुराद ज़रूर पूरी होती है। राजनैतिक एवं फ़िल्मी हस्तियां यहाँ बहुतायत में आती हैं। इस पीताम्बरा पीठ में देश विदेश से श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं। यहाँ आने वाला प्रत्येक श्रद्धालु मन में माता रानी के प्रति यह विश्वास ले कर आता है कि उसके बिगड़े हुए काम ज़रूर बन जायेंगे। यहाँ माता बगलामुखी के दर्शन एक छोटी सी खिड़की से किये जाते हैं। श्रद्धालुओं को माता रानी की मूर्ति के समक्ष खड़े होने का अथवा उसे छूने का मौका नहीं मिलता है। ऐसा माना जाता है कि स्वामी जी की प्रेरणा से ही इस मंदिर में चतुर्भुज रूप में माता पीताम्बरा की स्थापना हुई। चतुर्भुजी देवी के एक हाथ में गदा, दूसरे हाथ में पाश ,तीसरे हाथ में बज्र और चौथे हाथ में दैत्य की जीभ है। जिस प्रकार माता का नाम पीताम्बरा है उसी प्रकार इनका श्रृंगार भी पीले वस्त्रों, पीले

फूलों एवं अन्य पीली वस्तुओं से होता है। यहाँ आने वाले भक्तगण भी पीले रंग के मिष्ठान का ही भोग चढ़ाते हैं। वैसे तो साल में सभी दिन माता के दर्शन के लिए मंदिर खुला रहता है। पर शनिवार को यहाँ दर्शन लाभ का अलग महत्त्व माना जाता है। माता पीताम्बरा के ही विशाल मंदिर में ही एक तरफ विराजमान माता धूमावती का मंदिर बना हुआ है|धूमावती माता को भक्त शक्तिरूपा मान कर पूजते हैं। यहाँ हमे माता का एक भिन्न रूप देखने को मिलता है। यहाँ हमे देवी माँ एक मटमैली सफ़ेद साड़ी, घने बिखरे बाल,एक कौवे पर बैठी हुई दिखती हैं, जो की उनका सवारी स्वरुप है। मैया को ऐसे स्वरुप में देख बहुत आश्चर्य होता है। बाद में मालूम पड़ा की माता का यह स्वरुप एक विधवा का है, जिन्हें हम माँ धूमावती के नाम से जानते हैं। एक बात और विशेष है कि माँ धूमावती के दर्शन सप्ताह में एक दिन केवल शनिवार को ही किये जा सकते हैं, बाकि के दिनों में यह मंदिर आम नागरिकों के लिए बंद रहता है। यहाँ माता का प्रसाद भी अलग प्रकार का लगता है,शनिवार के दिन लोग यहाँ माता को भोग में प्याज़ के पकोड़े चढ़ाते हैं। ऐसा कहते हैं की तांत्रिक लोग भी माँ धूमावती में विशेष आस्था रखते हैं।

दतिया सिर्फ पीताम्बरा पीठ के कारण ही प्रसिद्द नहीं है,यहाँ के अन्य मंदिर एवं धार्मिक स्थल भी दर्शनीय हैं। जैसे – बड़े गोविन्द जी का मंदिर।

१. **बड़े गोविन्द जी का मंदिर** : यह मंदिर भी दतिया शहर के मध्य, गोविंदगंज में स्थित है या यूँ कहें की यह मुख्य बाजार में स्थित हैं। यह मंदिर वीर सिंह देव महल से ज्यादा दूर नहीं है। यहाँ आराम से पैदल जाया जा सकता है। यह मंदिर मुख्य रूप से श्री कृष्ण को समर्पित है और बहुत भव्य बना हुआ है। इस मंदिर की परिक्रमा पथ पर श्रद्धालु एक परिक्रमा जरूर करते हैं। जन्माष्टमी पर इस मंदिर की सजावट देखते ही बनती है।

२. **हनुमान गढ़ी** : दतिया के किले चौक पर ही हनुमान जी का एक बहुत प्राचीन मंदिर है जिसका नाम हनुमान गढ़ी है। यह मंदिर भी बहुत भव्य है। इस मंदिर की विशेषता है कि इसकी प्रतिमा जिसमें हनुमान जी शनि देव को अपनी टांगों में दबाये हुए हैं।

३. **गुप्तेश्वर धाम** : यह महादेव जी का धाम है और अपार प्राकृतिक सुंदरता को अपने में समेटे हुए है। यह शिवलिंग पहाड़ी पर स्थित है। यहाँ स्थानीय लोगों की मान्यता है कि यह मंदिर एवं संदर्भित पहाड़ निरंतर बड़ा होता जा रहा है।

४. **सोनागिरि जैन मंदिर** : सोनागिरि में १०० से ज्यादा मंदिर हैं। यहाँ मुख्य मंदिर श्री चन्द्रप्रभु का है।यह मंदिर भी बहुत भव्य बना हुआ है।

५. **रतनगढ़ माता का मंदिरः** यह मंदिर सेवड़ा तहसील में आता है। यह मंदिर एक पहाड़ पर बना है और इसके आसपास जंगल है,तो लोग यहाँ कम ही आते हैं। यहाँ पर कुंवर बाबा और माता रतनगढ़ कि बहुत मान्यता है। इस स्थान कि मान्यता भी पौराणिक महत्व कि जगहों में होती है।

६. **राम लाला का मंदिर असनाई** : यह मंदिर दतिया के जिला अस्पताल के समीप स्थित है| यह भी बहुत सुन्दर और भव्य बना हुआ है। यह मंदिर एक सरोवर के किनारे बना हुआ है। यहाँ भी भीड़भाड़ ज्यादा नहीं होने के कारण शांति बनी रहती है। बरसात में जाने से यहाँ कि प्राकृतिक छटा देखते ही बनती है।

७. **बालाजी सूर्य मंदिर, उन्नाव,दतियाः**– यह यहाँ का मुख्य मंदिर माना जाता है। यह दतिया शहर से १८ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस मंदिर में सूर्यदेव कि मूर्ती नहीं है अपितु इसके गर्भ गृह में सूर्य यन्त्र स्थापित है। यह मंदिर महलनुमा बना हुआ है। ऐसी मान्यता है कि यदि आप यहाँ पहुँच,नदी में स्नान कर सूर्य यन्त्र पर जल चढ़ाओ तो आपके चर्मरोग ठीक हो जाते हैं।

८. **सनकुआं तीर्थ सेंवढ़ा** : यह एक बहुत ही पवित्र क्षेत्र है। यह वही क्षेत्र है जहाँ ब्रम्हा जी के पुत्रों सनत, सनन्दन और सनत कुमार ने तप किया था। इसी स्थल पर मंडला देवी का मंदिर भी है। यह स्थल जितना धार्मिक है उतना ही प्राकृतिक रूप से भी खूबसूरत है| यहाँ के नज़ारे आने जाने वाले श्रद्धालुओं को अनायास ही अपनी तरफ आकर्षित करते हैं।

९. **बड़ी माता मंदिर या विजय काली पीठः** यह मंदिर वीर सिंह देव महल के प्रवेश द्वार पर स्थित है। इस मंदिर की दतिया में बहुत मान्यता है। दतिया के लोग इन्हे अपनी कुलदेवी के रूप में पूजते हैं| विजय काली पीठ में जलाभिषेक की बहुत मान्यता है। कहते हैं कि माता से मांगी गयी हर मन्नत पूरी होती है। इस मंदिर के सामने ही लक्ष्मी–नारायण मंदिर है। काफी श्रद्धालु यहाँ भी पूजन अर्चन के लिए आते हैं।

१०. **बड़े गणेश जी का मंदिरः** यह दतिया जिला अस्पताल के समीप ही है। जिला अस्पताल से आप यहाँ तक टहलते हुए भी जा सकते हैं। यह बहुत ही भव्य रूप से बना हुआ है एवं अपने नाम के अनुरूप गणेश जी को समर्पित है। यहाँ भक्तगण अपने विघ्ननाश के लिए प्रार्थना करते हैं। दतिया एक धार्मिक नगरी है, यहाँ मंदिरों कि संख्या रखना संभव नहीं है। यहाँ मंदिर के कुछ दर्शनीय तथ्यों के सामने विज्ञानं भी हार मान जाता है। उद्धरण के लिए यहाँ माँ पीताम्बरा तीन प्रहार में तीन बार रूप बदलती हैं। यदि किसी भक्त ने सुबह माँ के दर्शन किसी रूप में किये हैं, तो उसे दोपहर में माँ के अलग स्वरुप के दर्शन होते हैं। तीसरे पहर में माता का रूप पुनः बदला हुआ नजर आता है। देवी माँ के बदले स्वरुप का राज आज तक कोई नहीं जान सका। इस विषय पर वैज्ञानिक भी निरुत्तर होकर माँ को बारम्बार प्रणाम करते हैं एवं उनकी पूजा अर्चना करते हैं।

हे पीताम्बरा, मातु भवानी, कीजे कृपा जन पर हे भवानी
कीजे दया का दान,हे माँ भगवती, तुम्हे शत शत प्रणाम।
इति

पूजिय बिप्र सील गुन हीना

- विष्णु स्वरूप पाण्डेय (मैनपुरी/कानपुर)

महाकवि तुलसीदास जी की अमर कृति 'रामचरितमानस' की कुछ चौपाइयों पर अनावश्यक, द्वेषपूर्ण और राजनीति से प्रेरित होकर प्रचार किया जा रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दू धर्म ग्रन्थों के विरोध में बने 'हल्लाबोल' गिरोह के सदस्यों का साहित्य से दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं है। ऐसे 'महाज्ञानियों' में साहित्य की थोड़ी भी समझ होने का प्रश्न ही नहीं उठता। किसी भी साहित्यिक रचना को समझने तथा उसपर कोई टिप्पणी करने से पहले उस विधा से सम्बंधित अधिक नहीं पर प्रारम्भिक जानकारी तो होनी ही चाहिए। हमारे लगभग सभी धर्म ग्रन्थ कविता में लिखे गए हैं और उच्चकोटि की साहित्यिक रचनाएँ हैं। इनमें विभिन्न प्रकार के छन्दों, अलंकारों और उक्तियों का प्रयोग किया गया है। इनमें अन्योक्ति, अतिशयोक्ति, ब्याज स्तुति और ब्याज निन्दा का भी प्रयोग हुआ है। इसमें कहा कुछ जाता है पर अर्थ कुछ और ही निकलता है। किसी को लक्ष्य कर कोई बात कही जाती है पर लागू किसी और पर होती है। प्रशंसा या निन्दा किसी और की होती है किन्तु निशाना कहीं और होता है। एक बात और अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अधिकतर लोग पर्यायवाची शब्दों को समानार्थक समझते हैं, जबकि ऐसा नहीं है। शब्द पर्यायवाची तो हो सकते हैं पर उनका समानार्थी होना आवश्यक नहीं है। पवन, समीर और प्रभंजन पर्यायवाची तो हैं, पर समानार्थी नहीं हैं। पवन सामान्य हवा है, समीर प्रभातकालीन शीतल, मन्द वायु है और प्रभंजन अति वेगवान शक्तिशाली तूफान होता है। काव्य-ग्रन्थों पर नुक्ताचीनी करने से पहले इतनी समझ तो होनी ही चाहिए कि कवि ने कहाँ, किस के लिए किस शब्द का प्रयोग किया है और उसका क्या अर्थ निकलता है।

सन्दर्भित

अर्धाली पूजिय बिप्र सील गुन हीना।

सूद्र न गुन गन ग्यान प्रबीना।।

कबन्ध वध के प्रसंग में अरण्यकाण्ड में आती है। इसमें आए 'बिप्र' को ब्राह्मण का समानार्थी मानकर हायतौबा मचा दी गई है। आजकल ब्राह्मण शब्द को एक जाति विशेष के लिए रूढ़ कर दिया गया है। विप्र इसका समानार्थक नहीं है। विप्र वह व्यक्ति है जो सोते-जागते, उठते-बैठते हर पल और हर श्वास में मानव समाज ही नहीं, जीव मात्र के कल्याण की कामना करता रहता है और उसी के लिए समर्पित रहता है। किसी के अहित का विचार उसके मन में कभी आता ही नहीं। सोचिये, ऐसा व्यक्ति क्या कभी गुणहीन, नैतिकता से दूर या शीलरहित होसकता है? प्राणिमात्र का हितचिन्तक कभी भी 'सील गुन हीना' हो ही नहीं सकता। अतः वह हर हाल में पूजनीय है, सम्माननीय है। इसी लिए कवि ने उक्ति-वैचित्र्य का प्रयोग किया है। आइये, अब इसके दूसरे भाग पर दृष्टिपात करें-- सूद्र न गुन गन ग्यान प्रबीना । यह तो विदित ही है कि शूद्र कोई जाति विशेष या वर्ग विशेष नहीं वरन् एक प्रवृत्ति है। इस प्रवृत्ति का स्वामी स्वार्थी होता है, उसे अपने हित के अलावा कुछ और दीखता ही नहीं है। सामाजिक अनुशासन, सामाजिक परम्पराएं और समाज हित उसकी दृष्टि में महत्वहीन हैं। वह स्वभाव से विद्यमान व्यवस्था विरोधी, मनमौजी और स्वच्छन्द आचरण का पोषक होता है और सुझाव या सुधार की बात पर एकदम भड़क जाता है। अब स्वयं ही देख लीजिए, एकतरफ वह व्यक्ति है जो सदैव विश्व कल्याण की ही कामना करता है और दूसरी तरफ वह व्यक्ति है जो अपने स्वार्थ के अलावा अन्य किसी की भलाई की बात सोच ही नहीं सकता।

पाठक स्वयं ही निर्णय कर सकते हैं कि दोनों में कौन सम्मान का पात्र है और कौन नहीं। कौन गुणी हो सकता है और कौन गुणहीन।

आभार

बहुप्रतीक्षित श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा मई 2023 माह की चंद्रिका चतुर्वेदी फरौली विशेषांक के रूप में प्राप्त हुई। हम आभारी हैं सभापति डॉ. प्रदीप जी, मंत्री श्री मुनींद्र नाथ जी, चतुर्वेदी चंद्रिका के संपादक श्री शशांक जी एवं अन्य कार्यकारिणी सदस्यों, उपस्थित बांधवों का जिन्होंने कार्यकारिणी बैठक का मूर्त रूप प्रस्तुत किया है। आप सभी ने जिस तरह से विभिन्न बिंदुओं पर विवेचना करके प्रकाश डाला है, काबिले तारीफ है। साथ ही साथ प्रथम पृष्ठ, महासभा द्वारा फ़रौली ग्राम के सम्मानित बांधवों एवं कार्य- कारिणी की तस्वीर प्रकाशित करना अपने आप में हर ग्रामवासी के लिए गौरवान्वित एवं प्रोत्साहित करने वाला क्षण है।

धन्यवाद है सभापति प्रदीप जी का जिनके मार्गदर्शन में चतुर्वेदी चंद्रिका के संपादक श्री शशांक जी ने फरौली कार्यकारिणी बैठक एवं जयपुर होलीमिलन समारोह की आख्या को पूरी तन्मयता के साथ सचित्र प्रस्तुतीकरण किया है। सादर पालागन

– **लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी** (फरौली/गाजियाबाद)

अम्मा

परिवार का सबसे ओजस्वी सूत्र
माँ ही नहीं, पूरी दुनिया थी,
सबकी मुस्कराहट का एक प्यारा सा जरिया थी,
आज हमारे पास तो नहीं है ,
पर हमेशा साथ रहने वाली,
हम सबकी अद्वितीय शक्ति है!

जब हम अम्मा को 'माँ' शब्द से स्मरण करते हैं, तो केवल उनके बच्चों - यानि रीमा रिया के परिपेक्ष्य से नहीं करते हैं! ममता का विशिष्ट गुण- उनके सब प्रियजनों में 'वंदना' शब्द का समानार्थी है ! ०५/ ०६ /१९६१ में प्रभा चतुर्वेदी (प्रिय नानीजी) और राधा कृष्णा चतुर्वेदी (प्रिय नानाजी) के परिवार में पहली ख़ुशी की गूँज देने वाली अम्मा - अपने पुरे जीवन खुशियों को प्रसारित करने का एक खूबसूरत साधन बानी रही!

अपनी सोच के लिए निरंतर आवाज़ उठाने वाले और लोकोपकार को जीवन समर्पण करने वाले, अधिकतर अपनों के पीछे छोड़ देते हैं। हमारी अम्मा जीवन भर मायके को साथ लेकर चलने वाली तो थी ही, लेकिन १९८५ में अपने विवाह के उपरांत उन्होंने छोटे से बड़े- सभी परिजनों के लिए ममता और आदर की नींव पर बनाई हुई जैसे एक विशिष्ट सृष्टि का निर्माण ही किया था! १९८९ में रीमा के एक साल पूरा करने पर, काम्पिल्य परिवार के सब बच्चों को लेके उन्होंने कम्पिल से आगरा के ओर एक प्रगति के पथ को उजागर किया। इस रूप में यशोदा जैसे- उन्होंने कई सारे बच्चों को एक दूसरी माँ का विशेष धन समर्पण किया ! वहां से शुरू हुई हमारे आज के नासिक/ काम्पिल्य परिवार की अनगिनत यादों में लिपटी हुई कहानी। १९९४ में रिया के जन्म के बाद, मम्मी की प्यारी सी ये टोली नासिक आई और २९ वर्षों के पश्चात भी मम्मी की संजोयी हुई यादों को हर पल साथ लेके चलने वाला एक जूट समूह की तरह आज भी खड़ी है। समाज के कई लोगो से वे व्यक्तिगत रूप से जुडी हुई थी ... उनके लिए समाज भी एक विस्तृत परिवार था. नासिक में माथुर- चतुर्वेदी सम्प्रदाय में सक्रिय रूप से भाग लेने वाली, पुणे की सभा की भी स्थापना उन्होंने ही की थी! अपने समाज से जुड़कर, अपनी क्षमता से कई ज़्यादा उन्होंने सबको जोड़के रखा और कई सारे अवसरों पर अपना योग दान दिया !

एक तरह से देखा जाए तो वे काफी उद्यमी और साहसी थी । १९९० से ही राजनीति से जुडी रहने वाली, आगरा में एक बार तो निर्वाचन के लिए एकदम तैयार भी थी । पर कई अप्रत्याशित परिस्थितियों के कारण ये संभव न हो सका। बदलाव लाने के लिए हमेशा तत्पर- हमारी अम्मा- अंत तक राजनीति की सामायिक घटनाओं से जागरूक रही ! योगी जी और मोदी के निर्वाचित होने पर - पार्टी कार्यकर्ताओं के अलावा अगर किसी ने भगवान को सच में जाके लड्डु समर्पण किये तो वे हमारी अम्मा ही थी । राजनीति में भले ही वो किसी एक पद पर नियुक्त तो नहीं हो पायी लेकिन परोपकार के मामले में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। ऐसे तो वे जान कल्याण सेवा (पुणे) और निवारा (वृद्धाश्रम) से अंत तक जुडी रही, लेकिन covid के समय उन्होंने आटे से लेके दाल से लेके दवाइयां हर चीज़ ज़रूरतमंदो में पहुंचने की पूरी कोशिश की. जैसे हमने कहा के सोच को निरंतर एक आवाज़ देने वाली हमारी माँ, कभी कुछ गलत होता हुआ देख ही नहीं सकती थी. महाराष्ट्र में कई काम करने वाली महिलाऐं अपने पतियों की बुरी आदतों से कई कई साल उत्पीड़ति थी । बचपन से हमने देखा है के ऐसे लोगो को समझा बुझा के- या कई बार पुलिस के हवाले करते हुए हमारी माँ ने हर एक दिन किसी के जीवन में सुधार की एक नई किरण उजागर की!

उन्हें हमेशा ये भी लगता था के किसी न किसी रूप में हर किसी को हमेशा कुछ करते रहना चाहिए। ५७ की उम्र में उन्होंने अपने अचार का उद्योग शुरू किया और उसके माध्यम से संवृद्धि की उड़ान भी भरी। अंत धाम में निवास के पूर्व एक सप्ताह पहले तक वे अपने इस प्यारे से कारोबार में सक्रिय रही। चतुर्वेदी बिज़नेस ग्रुप की प्रगति देख वो बहुत प्रसन्न होती थी। कैसे किसी को बढ़ाया जाए, ये रणनीति तो जैसे बिस्कुट जैसे उनकी सुबह की चाय का संगी थी।

माँ से संबधित कुछ भी उल्लेखित तब तक सफल नहीं होता जब तक उनके समृद्ध व्यक्तित्व को याद न किया जाए । अपने बच्चो की वे जान थी और जीवन संगिनी के रूप में पापा के जीवन को उजागर करने वाली एक शुभ्रता थी जिनके जाने का खालीपन शायद ही शब्दों में कभी व्यक्त हो सकता है ! ६ दिन में हमारी दुनिया बदल गई! लेकिन एक दैविक शक्ति के हम कृतज्ञ ही हैं के संयोग से पापा भी शिप से आ गए और रिया भी दूसरे देश से बिना किसी पूर्व लक्ष्य से उनके साथ आखरी समय में साथ थी। महाराष्ट्र तो वे आ गयी लेकिन अपनी मिटटी से वो हमेशा ही जुडी रही । गर्मियों के फालसे, लीचियाँ और यु.पी की ककड़ी व मूंगफलियां उनके मायके से हर साल नमिता मामी भेजती ही थी। ये छोटी छोटी चीज़ें ही तो थी जो मम्मी को खुश करने के लिए काफी थी । कभी भी उन्होंने सिर्फ अपने लिए कुछ खरीदा भी हो तो गनीमत है। सब लोगो को अपने ही एक अंदाज़ में कुछ न कुछ देने वाली अम्मा हमें अनगिनत स्मृतियाँ देके ९ अप्रैल को २०२३ चली गई!

उन्हें कभी भी पसंद नहीं था के उन्हें याद करके कोई भी दुखी हो । परम्पराओं की प्रेमी थी हमारी अम्मा। हरतालिका तीज का मानो हरा रंग हो, तो होली के गुलाल की चमक, दिवाली पर हमारी लक्ष्मी और सत्यनारायण कथा में पञ्चमृत की ठंडक, माँ के प्रभाव को चित्रित करने का सबसे योग्य तरीका होगा। हम हमेशा कहते हैं के याद उन्हें किया जाता है, जिन्हे आप भूल पाओ. अम्मा की यादें हम सबका एक अटूट हिस्सा है! ढोलक की गूँज में या साथ खाना खाने में, सबके साथ मिलने पर, या छोटी बड़ी उपलब्धियों के बीच- अम्मा का आशीर्वाद सदा हम सबका सहचार बना रहेगा।

(र.क्र.-1395)

समाज समाचार

- आगरा टेबल टेनिस की का उत्कृष्ट खिलाड़ी मौलिक चतुर्वेदी पुत्र श्री मनोज चतुर्वेदी (कमतरी/कमला नगर,आगरा) ने आगरा एकलव्य स्टेडियम में आयोजित डिस्ट्रिक्ट टूर्नामेंट में U17 एंड U 19 दोनों वर्गों में जीत हासिल की। पूर्व में भी मौलिक आगरा के बाहर भी कई टूर्नामेंट को जीत आगरा चतुर्वेदी समाज का नाम रोशन कर चुके हैं।

- जलज चतुर्वेदी पुत्र श्री संजीव चतुर्वेदी एवं सुजाता चतुर्वेदी कोटा राजस्थान ने वर्ष 2023 सीबीएसई बोर्ड राजस्थान से 12वीं की परीक्षा 94 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

- अनुष्का चतुर्वेदी पुत्री श्री अनुराग चतुर्वेदी ,शौटी फिरोजाबाद उत्तर प्रदेश ने वर्ष 2023 सीबीएसई बोर्ड परीक्षा डीपीएस इंटर कालेज से 12वीं की परीक्षा 95 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

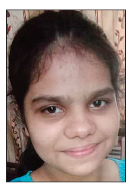

- श्री अनुराग चतुर्वेदी (हिंडोन/आगरा) बेलनगंज,आगरा के वार्ड नंबर 65 से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी के रूप में अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी से पार्षद का चुनाव लगातार दूसरी बार नये कीर्तिमान मतों के साथ 1497 मतों से विजयी घोषित हुए।

- चि. सोहम सुपुत्र श्री सौरभ चतुर्वेदी (फरौली/लखनऊ) ने हाईस्कूल 10 की परीक्षा में 98 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की।

- सुश्री संस्कृति चतुर्वेदी पौत्री स्व० श्री प्रेम कुमार चतुर्वेदी, पुत्री संदीप चतुर्वेदी - शुभांगी चतुर्वेदी (फतेहपुर करखा/गाजियाबाद) ने सीबीएसई बोर्ड के अंतर्गत दसवीं कक्षा की परीक्षा में 97 प्रतिशत अंक प्राप्त किए है। इस अवसर पर आपने पत्रिका सहायतार्थ 501/- रुपये प्रदान किये। (र.क्र.-1400)

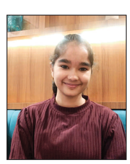

- निशांत चतुर्वेदी पुत्र श्री सुतीक्ष्ण चतुर्वेदी (फरौली/दिल्ली) ने कक्षा XII में 95.4 प्रतिशत अंक प्राप्त कर (सीबीएसई बोर्ड) उत्तीर्ण की।

- युवांश पाठक पुत्र मधुकर पाठक, गुड़ की मंडी आगरा,कक्षा 12 में आईसीएससी बोर्ड से 96 प्रतिशत अंक से उत्तीर्ण की।

- ICSE बोर्ड के अन्तर्गत कक्षा 10वीं में सुश्री उर्वी पांडेय सुपुत्री श्री अम्बर पांडेय (मैनपुरी/भोपाल) द्वारा 93% अंक से उत्तीर्ण होने पर हार्दिक बधाई।

- प्रज्ञा चतुर्वेदी पुत्री स्व. लक्ष्मीपति चतुर्वेदी(चंद्रपुर/भोपाल) ने 10वी की परीक्षा एम.पी.बोर्ड के अंतर्गत 91 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की है।

- स्व. श्रीमती कस्तूरी चतुर्वेदी पत्नी श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी (सिकंदरपुर खास/ भोपाल) की स्मृति में उनकी पुण्यतिथि दिनांक 4 जून 2023 के अवसर पर अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 5100/- प्रदान किए। (र.क्र.)

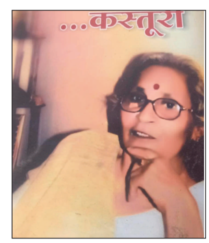

- संयम चतुर्वेदी पुत्र स्व.समीर चतुर्वेदी, कानपुर ने IMS ENGINEERING COLLEGE, GHAZIABAD मे session 2022-23 में IT ब्रांच में कॉलेज में 1ST पोजीशन प्राप्त की।

- आयुषी चतुर्वेदी कानपुर आईसीएसई बोर्ड के अंतर्गत दसवीं की परीक्षा 83 प्रतिशत के पास की।

- चिरंजीव हर्षवर्धन (हर्षित) सपुत्र श्री अरविंद कुमार चतुर्वेदी सुपौत्र स्व. त्रिवेणी सहाय जी पाण्डेय (दिल्ली/तालगांव) की पक्काइत झालावाड़ निवासी स्वर्गीय बासुदेव चतुर्वेदी की पुत्री आयुष्मती पूर्वा चतुर्वेदी के साथ दिनांक 5 मई 2023 को दिल्ली में बिना किसी आडंबर के केवल 1100/-रुपए, 1किलो मिठाई नारियल एवं एक गिलास हर्षित के ताऊजी श्री हीरालाल पाण्डेय को भेंट कर सम्पन्न

हुई। इस उपलक्ष में श्री हीरालाल पाण्डेय ने चतुर्वेदी चंद्रिका को 501/- भेंट किए । उनके इस कार्य की समाज सराहना करता है। बधाई। (र.क्र.-1384)

- श्री वीरेंद्र नाथ चतुर्वेदी एवम श्रीमती संतोष चतुर्वेदी (करहल/चंदवार/नोएडा) ने अपने सुखद दांपत्य जीवन की 60 वीं वर्षगांठ के अवसर पर 5100/- अन्नपूर्णा सहायतार्थ प्रदान किए। बधाई। (र.क्र.-1385)

- जहांगीरपुर स्थित अपने निवास बुद्धसेन भवन के नवनिर्माण के शुभ उपलक्ष्य पर श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा सहायतार्थ 1100/- रुपये श्री आलोक चतुर्वेदी (जहाँगीरपुर/बैंगलौर) प्रदान किये। आभार। (र.क्र.-1387)

- सौ. आयुषी सुपुत्री -श्रीमती मीनू चतुर्वेदी - स्व. सुनील चतुर्वेदी (सिकंदरपुर/भोपाल) का शुभविवाह चि. शुभम सुपुत्र श्री के.के. चतुर्वेदी - श्रीमती अंजली चतुर्वेदी (सांगोद/रावतभाटा) के साथ दिनाँक 23 अप्रैल 2023 को भोपाल में संपन्न हुआ। इस उपलक्ष में महासभा सहायतार्थ 501 रुपये व महाविद्यादेवी मंदिर सहायतार्थ 501 रुपये प्रदान किए। बधाई।

- चि. नितिन सुपुत्र श्री देवेंद्र नाथ चतुर्वेदी, (दीपक) - श्रीमती शोभा चतुर्वेदी सुपौत्र स्व. श्री कौशलेंद्र नाथ चतुर्वेदी - श्रीमती पुष्पा चतुर्वेदी (जसवंत नगर/कोटा) का शुभ विवाह सौ. शिवांगी सुपुत्री श्री भूषण - श्रीमती गुंजन चतुर्वेदी सुपौत्री स्व. सुभाष चंद्र जी - स्व. श्रीमती रमा चतुर्वेदी (फर्रुखाबाद/साहिबाबाद) के साथ दिनांक 1 मई 2023 को संपन्न हुआ। इस अवसर पर आपने पत्रिका सहायतार्थ 1100/- रुपये प्रदान किए। (र.क्र.-1390)

- सुश्री संस्कृति चतुर्वेदी पुत्री संदीप चतुर्वेदी - शुभांगी चतुर्वेदी (फतेहपुर करखा/गाज़ियाबाद) ने सीबीएसई बोर्ड के अंतर्गत दसवीं कक्षा की परीक्षा में 97 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण करअपने स्कूल में सर्वोच्च अंक प्राप्त किए।

- **आवश्यकता है :** कोई चतुर्वेदी निराश्रित बालिका (16 वर्ष से ऊपर हो) की ज़रूरत है। बालिका की शिक्षा दीक्षा, रहने का संपूर्ण खर्च तथा उचित समय पर शादी का खर्च भी यह माथुर चतुर्वेदी परिवार उठाने के लिये समर्थ है तथा तत्पर है। बालिका की आवश्यकता वृद्धा माँ २४x ७ के देख भाल के लिए है। संपर्क सूत्र, ९८७११७०५५९

- माँ स्व.आशा चतुर्वेदी -पिता स्व. शरद चतुर्वेदी जी स्मृति में अन्नपूर्णा योजना हेतु विवेक जी,फरौली ने 5100/- प्रदान किये। (र.क्र.-1356)

- चि. आदर्श कुमार चतुर्वेदी पुत्र स्व. त्रिभुवन नाथ (फरौली/नागपुर) एवम श्रीमती रचना चतुर्वेदी सुपुत्री स्व. रामगणेश जी (जयपुर) के विवाह की पच्चीसवी वर्षगाँठ के अवसर पर महासभा सहायतार्थ 501/- रुपये प्रदान किए। यह कार्यक्रम ग्राम फरौली में आयोजित किया गया।

- **फिरोजाबाद।** मुहल्ला चौबान में जेठ मास दिनांक 20मई 2023 को हरीश चतुर्वेदी के आवास पर अखंड रामचरितमानस पाठ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ पंडित शिवम् मिश्रा द्वारा पुरोहित हरीश चतुर्वेदी एवं पत्नी रागनी चतुर्वेदी को जोड़ से गांठ बंधवा कर चौकी पर लाल कपड़ा बिछवा भगवान राम दरबार की मूर्ति एवं हनुमान जी की मूर्ति विराजमान कर विधि-विधान पूर्वक पूजा-अर्चना कर रामचरितमानस मानस का संगीत मय स्वसर पाठ शुरू किया। चौपाई,सौरठा,दोहा,छंद का बड़ी तन्मयता पूर्वक शुद्ध उच्चारण करते हुए वक्ताओं ने अनोखा उदाहरण पेश कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। पूरा मुहल्ला भक्तिमय हो गया। होलीपुरा निवासी चार वर्षीय संस्कारी बालक अंजन चतुर्वेदी द्वारा संगीतबद्ध लय-ताल में पढ़ी गई रामचरितमानस की चौपाई,सौरठा पाठ की उपस्थित श्रोताओं ने भूरि भूरि प्रसन्नता की। अखंड रामचरितमानस मानस का समापन पंडित शिवम् मिश्रा ने पुरोहित बने पति पत्नी से हवन-यज्ञ, आरती कर प्रसाद वितरित कर समापन करवाया। इस अवसर पर विनायक चतुर्वेदी,विधू चतुर्वेदी , मधुकर चतुर्वेदी,तनुजा चतुर्वेदी आदि अनेक बान्धव उपस्थित थे।

  - शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी

- श्री नरेन्द्र कुमार एवम श्रीमती साधना चौबे (फरौली/ग्वालियर) द्वारा 34वी वैवाहिक वर्षगांठ के उपलक्ष्य में पत्रिका सहायतार्थ 500/- रुपये प्रदान किये। बधाई। (र.क्र.-1405)

मेरे मामा

हर किसी के आंसू पोछने को जैसे ईश्वर ने उनको चुना था,
अपना हर सपना उन्होंने बस परिवार के इर्द गिर्द ही बुना था,
मेरे मामा जैसा शायद ही इस दुनिया में कोई दूसरा होगा,
ज़रूर अंश थे वो उस भगवान का ,
किसी मंशा से उसने पृथ्वी पे उन्हे भेजा होगा,
हमारा जीवन सदा आपका ऋणी रहेगा,
जो प्यार मिला आपसे वो शायद ही कोई दे सकेगा,
न जाने कैसे आता था उनमें इतना साहस,
की कभी रुकते ना थे कदम उनके सही के साथ चलने में,
लड़ जाते थे दुनिया से पूरी,
पर हटते ना थे पीछे अपने कहे को पूरा करने में,
ऐ दुनिया वालों मत घसीटों मेरे मामा को किसी नफरत के खेल में,

बहुत प्यार था उनमें रह जायेंगे सब पीछे कोई भी ना होगा उनके मेल में,
बस प्यार ही बांटा उन्होंने सबको,
सबका गम अपना लिया,
करते रहे सबके मन की ,
और अपने मन को समझा लिया,
अब बन के याद मीठी सी वो रहेंगे सदा हमारे मन में,
मामा मेरे चंदा मामा से भी प्यारे,
बन सितारा चमकेंगे नील गगन में।।

अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि
संचिता – अर्पित चतुर्वेदी
अंकिता – अंबर चतुर्वेदी

बिछड़े स्वजन

* श्री फणीन्द्र नाथ चतुर्वेदी,भाईयो (चन्द्रपुर/कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 09 मई 2023 को कानपुर में हो गया।

* श्री दुर्गेश चतुर्वेदी पुत्र स्व.श्री हेमराज जी चतुर्वेदी (छप्पर वाले,मैनपुरी) का स्वर्गवास दिनाँक 12/05/2023 को आगरा में हो गया।

* श्रीमती गायत्री चतुर्वेदी पत्नी श्री अजीत चतुर्वेदी (आगरा) का देहावसान दिनाँक 01 मई 2023 को प्रातः 6 बजे जयपुर में हो गया।

* श्री रमेश चंद्र चतुर्वेदी (मैनपुरी/लखनऊ/सिलवासा) का स्वर्गवास मुम्बई में दिनाँक 03 मई 2023 को हो गया।

* श्रीमती रीना चतुर्वेदी पत्नी श्री आनंद चतुर्वेदी (पुरा/सिलीगुड़ी) का स्वर्गवास दिनांक 04 मई 2023 को सिलीगुड़ी में हो गया।

* श्री समीर चतुर्वेदी पुत्र डॉ. उमेश चतुर्वेदी (अशोक जी) भरतपुर निवासी का असामायिक स्वर्गवास लगभग 43 वर्ष की अल्प आयु में दिनाँक 30 अप्रैल 2023 की रात्रि 10 बजे हो गया।

* श्रीमती कस्तुरी देवी पत्नी स्व. श्री इन्द्रजीत चतुर्वेदी (कछ्पुरा/आगरा) का स्वर्गवास दिनांक 17/4/23 को आगरा में हो गया।

* डॉ. अंकित चतुर्वेदी पुत्र श्री अजीत– नमिता चतुर्वेदी (चन्द्रपुर/लखनऊ) का असामयिक निधन लगभग 35 वर्ष की आयु में नोयडा में दिनाँक 24 मई 2023 को हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

सदस्यता आवेदन प्रपत्र

सेवा में,

मंत्री,
माथुर चतुर्वेदी महासभा।

महोदय,

मैं ....सुपुत्र ....मूल निवासी .... वर्तमान पता ....गोत्र ....अल्ल.................... जन्मतिथि ....फोन नं. ....मोबा.नं. .... ई–मेल आई.डी .... श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की कुल क्रमागत/आजीवन/सत्र सदस्यता/चतुर्वेदी चंद्रिका की वार्षिक/पांच वर्ष/महासभा एवं पत्रिका की संयुक्त सदस्यता ग्रहण करना चाहता हूँ एवं इस निमित्त **''श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा''** के पक्ष में देय रूपये .... शब्दों में................................... .... डिजिटल डायरेक्ट ट्रांसफर/नगद/चेक एटपार/बैंक ड्राफ्ट द्वारा प्रदान कर रहा हूँ। प्रमाण छायाप्रति संलग्न है।

मैं घोषणा करता हूँ कि –

1. मैं 18 वर्ष से अधिक आयु का माथुर चतुर्वेदी हूँ।
2. मै सत्यापित करता हूं कि मैने महासभा कि कुल क्रमांगत/आजीवन /सत्र (किसी एक) सदस्यता के लिए आवेदन कर रहा हूँ।
3. दिनांक 04.10.2020 को महासभा के अधिवेशन में पारित महासभा के संशोधित संविधान 2020 के प्रति मुझे पूर्ण आस्था एवं निष्ठा है तथा तत्–निहित नियमों, उपनियमों, धाराओं, उपधाराओं आदि के पालन के लिये वचनबद्ध हूँ।

दिनांकः भवदीय

संलग्नकः स्व–सत्यापित (ओरिजनल ब्लू इंक)
आधार कार्ड की छायाप्रति

हस्ताक्षर –
नाम–

1. **महासभा का आजीवन सदस्य ही पत्रिका की आजीवन सदस्यता तथा महासभा का सत्र सदस्य पत्रिका की वार्षिक सदस्यता ग्रहण कर सकेगा।**
2. **मैं .... उपरोक्त सदस्यता आवेदन पत्र में दिये गये सभी विवरण को महासभा के सदस्यता हेतु सत्यापित करता हूँ।**

हस्ताक्षर –
नाम –
कार्यकारिणी सदस्य
मोबाईल नंबर

महासभा सदस्यता शुल्क	पत्रिका सदस्यता शुल्क	महासभा आजीवन + पत्रिका (5वर्ष) संयुक्त सदस्यता
कुल क्रमागत रूपये 5001/–	वार्षिक रूपये– 251/– (नवीनीकरण शुल्क)	
आजीवन सदस्यता रूपये 501/–	महासभा सत्र सदस्यता एवं पत्रिका वार्षिक सदस्यता रूपये– 352/–	रूपये – 1501/–
सत्र सदस्यता रूपये 101/–	पत्रिका (पांच वर्ष) रूपये– 1000/– (केवल महासभा सदस्यों हेतु)	

पता – मंत्री, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, 405/406 चिरंजीव टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली– 110019

चतुर्थ पुण्य तिथि

आषाढ़, कृष्ण पक्ष, दशमी, दशमी, विक्रम संवत्, 2080 (13.06.2023)

जन्म : 18 मई, 1925
निर्वाण : 27 जून, 2019

स्व. श्री तुलसी राम चतुर्वेदी (चन्द्रपुर)

(आषाढ़, कृष्ण पक्ष, दशमी, विक्रम संवत् 2076)

जिनके पद चिन्हों से आगत, पीढ़ी को पथ मिल गया नया

पूज्य पिताजी स्वर्गीय् श्री तुलसी राम जी चतुर्वेदी की चतुर्थ पुण्य तिथि पर हम प्रियजन, श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र – पुत्रवधू	:	पीयूष – मंजुला, प्रवीण – सुषमा
पुत्री – दामाद	:	मधु – ईश्वर चन्द्र
पौत्र – पौत्रवधू	:	प्रशान्त – प्रिया, प्रखर – गार्गी, प्रतीक – सुरभि, प्रफुल्ल – प्रिया,
धेवती	:	कृतिका
प्रपौत्री	:	मुग्धा, मेधा

एवं समस्त भोजराज शोभाराम परिवार

(र.क्र. 2023/1382)

Bharatgas
COOK FOOD. SERVE LOVE.

पिता
दुनिया का सबसे बड़ा दाता!

हाथ पकड़कर साथ चलनेवाले
हमेशा पते की बात करनेवाले
हमें दुनिया की हर खुशी मिले
इसके लिए जी जान लगानेवाले
जिंदगी के सफर में मंजिल की राह पर
संस्कारों के बल से सक्षम करनेवाले
जो जीवनभर हमें कुछ ना कुछ देते रहते है
उनके आशीर्वाद की बदौलत,
हम ख़ुशी से जीते रहते है!

रेखा गैस एजंसी
की तरफ से
पितृ दिन की हार्दिक
शुभकामनाएँ!

रेखा गॅस
एजन्सी

दु. नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001 फोन : (0257) 2221095,
2221195, 2225195, 2228495.
E-mail : rekhagas20032003@rediffmail.com

(र.क्र. 2023/1406)

प्रथम पुण्यतिथि

आषाढ़ी शुक्ल देवशयनी एकादशी
(29 जून 2023, गुरुवार)

स्वर्गीय उमा देवी

11/02/1943 - 10/07/2022

अम्मा! तुम कहाँ छुप गईं?
गली मोहल्ला शहर काटता
हर ठौर ढूँढें हम और पापा
बेटियों से छिना माँ और मायका
घर सूना बिखरा सा रहता
तुम थी लक्ष्मी, तुलसी इस अंगना

जननी खो, जानी क्या ममता
ना लौटोगी, तो को डाँटेगो मोय?
आशीर्वाद सदैव संग रहता
बरस हुआ, बिसरी न इक छन

शिवलोक गई सुहागन सजके
गोपेश नाम सदा भजना
अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि तुमको
हमरे अवगुण चित्त ना धरना
स्वप्न, हृदय में देवी स्वरूपा
करबद्ध प्रार्थना दर्शन देना।

ॐ

पत्नी - श्री गोपेश चतुर्वेदी,
सिकंदपुर/ दिल्ली 9953907923
पुत्री - स्व. दुलारे लाल जी एवं
स्व. कुल्ली देवी, कछपुरा/कानपुर

शोकाकुल :
सुपुत्र : पंकज-ज्योति; अमित
सुपुत्री : वंदना-स्वर्गीयअँचल, रंजना-निकोलस
प्रपौत्री : अनुष्का
धेवती : आकृति-अमन
धेवते : अभिकर्ष, रौनित

(र.क्र. 2023/1391)

भावपूर्ण श्रद्धांजली

स्व. विपिन विहारी
महाप्रयाण : 10 जनवरी 2004
(फरौली/ग्वालियर)

स्व. विमला देवी
महाप्रयाण : 02 जून 2019
(फरौली/ग्वालियर)

स्मरण कर आपको श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।
सदा रहे आशीष आपका प्रभू से प्रार्थना करते हैं।।

श्रद्धावनत

पुत्र - पुत्रवधु
नरेन्द्र कुमार – साधना
राकेश कुमार – संगीता
(फरौली/ग्वालियर/कोरबा)

पौत्र
कुणाल, अर्पित, अमन, अचिन

धेवता - धेवता वधु
मनोज – रीना, गौरांग (जयपुर)
मयंक – अंचिता, अतिक्ष (यू.के.)
यत्नेश – शिवानी, तनिष्क, तुशीन (अहमदाबाद)
अभिषेक – अंकिता, श्रीनिका (वेंगलोर)
अक्षय, गौरव (कलकत्ता)

धेवती - धेवती दामाद
भावना – हिमांशु, पुलिन, गौरा (पुणे)
मितवा – नवीन, मान्या (नीदरलैण्ड)
नेहा (मुंबई), सौम्या (आगरा/दिल्ली)

पुत्री - दामाद
रमा पत्नी स्व. राधेपूरण शरण
(चंद्रपुर/अहमदाबाद)
सुमन पत्नी स्व. नृपेन्द्र नाथ
(सिकंदरपुर/मुंबई)
सुनीला पत्नी वीरेन्द्र कुमार
(हिण्डौन/जयपुर)
मीना पत्नी अजीत कुमार
(कमतरी/आगरा)
क्षमा पत्नी गोपेश कुमार
(मैनपुरी/कलकत्ता)

बी–33, गांधीनगर, तानसेन मार्ग, ग्वालियर
9425754975, 9425532119

(र.क्र. 2023/1405)

श्री मती वंदना जी चतुर्वेदी

०५/०६ / १९६१ - ०९/ ०४ / २०२३

पूर्व अध्यक्ष, माथुर चतुर्वेदी सभा, पुणे शाखा

एक ज़िन्दगी में हज़ारों ज़िंदगियाँ बदलने वाली,
ममता की मूरत के लिए,
प्यार के कुछ धागे पिरोते हैं,
दी हुई उनकी अनगिनत खूबसूरत यादों को ,
अपने दिल में हमेशा संजोते हैं!

श्रद्धावनत:
पुत्र- पुत्री - स्वर्गीय राधा कृष्णा चतुर्वेदी- प्रभा चतुर्वेदी (होलीपुरा/ कानपुर निवासी)
पुत्र वधु - स्वर्गीय कैलाश चंद्र चतुर्वेदी- कांती देवी चतुर्वेदी (काम्पिल्य निवासी)
पति- मुकुल चतुर्वेदी (काम्पिल्य/ नासिक निवासी)
पौत्र - युरव

विनयावनत:
समस्त काम्पिल्य परिवार

(र.क्र. 2023/1395)

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2021–23
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' जून 2023

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

CANDYFLOSS

A Junior Junction

Mrs. Sheetal Dushyant Chaturvedi,
Director.

Smart AC Classrooms

Ideal Teacher - Child Ratio

Integrated pre-school – child care facility

Exclusive curriculum for the child care with age appropriate activities

Concept based learning with rich resources

VISIT US
Website : www.candyfloss.net.in
Instagram : cfsischool_official
Facebook : cfsischool

(र.क्र. 1295)7/12